रंग भरो प्रतियोगिता नं. ७७ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ७७ में जिन तीन चित्रों को पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमें से दो को यहां छापा जा रहा है. पुरस्कार विजेताओं के नाम और पते इस प्रकार हैं :

● अशोककुमार शर्मा, द्वारा श्री होतीलाल शर्मा, ६० जगन्नाथपुरी, मथुरा (उ. प्र.).

● महेशकुमार बोरा, द्वारा श्री मोहनलाल अ. बोरा, नवपुरा, मांडवी-कच्छ, जिला-कच्छ.

● भरत बी. त्रिवेदी, मंछूभाई रोड, लकी हाउस, टाप फ्लोर, रूम नं. १, मलाड (पूर्व), बंबई-६४.

ऊपर वाला चित्र अशोककुमार शर्मा का है. यह चित्र रंगों की दृष्टि से साफ-सुथरा और मनोहारी तो है ही, साथ ही दरवाजे के निकट खड़ी छोटी-सी लड़की को प्रतियोगी ने अपनी कल्पना से जोड़ा है, इससे चित्र में सजीवता आ गई है.

नीचे का चित्र महेशकुमार बोरा का है. उसने भी अपनी कल्पना से मूल चित्र में अनेक चीजें बड़ी बारीकी और सुघड़ता से जोड़ी हैं. रंगों का चुनाव भी सुरुचिपूर्ण और युक्तियुक्त ढंग से किया गया है.

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चों में से इनके प्रयास अच्छे रहे :

सुधीरकुमार दत्त, कानपुर; आसिफअली मलिक, घोड़ाखाल (नैनीताल); सुरेंद्रसिंह राठौर, देहरादून; शिवकुमार एस. इंजल्ली, सेलम (मैसूर राज्य); उषा बी. पटेल, वकोला, सांताक्रुज पूर्व (बंबई); सुषमा आर्य, देहरादून; ज्योति चौधरी, नई दिल्ली; कु. प्रमिलासिंह, मथुरा; अशोक दिवान, कलकत्ता; गुरमिंदर सिंग, चंद्रपुर (महाराष्ट्र); मोहनलाल मुरपानी, कटनी; विश्वजीत चौधरी, लखनऊ; विक्रमादित्य लौ, भरतपुर; राजीव निधि, हीनू (रांची); अनुरागचंद्र, इलाहाबाद; रेखा गुप्ता, मेरठ; वैद्य यासिन एच., नडियाद; मधु इसर, रोहतक (हरियाना); गोपालचंद्र जौहरी, लखीमपुर-खीरी तथा गोपालकृष्ण अग्रवाल, सुंदर-नगर कालोनी, मंडी. ●

27

पराग

फरवरी १९

१३०वां अं

मुखपृष्ठ :

गुड़िया की अ

सरस कहा

डेपुटेशन

खाना तो तुम लोग खूब खाते हो!
मगर, यार, हम तो भूखे ही रहते हैं!
खाने के बाद मंतर पढ़ना शुरू हुआ! थोड़ी ही देर में बोदू, लंबू सो गए!
अब मुझे भी सोना चाहिए, मैं जानता हूं आज रात भूत नहीं आएंगे!
पुनः शानदार जल-पान के बाद...
सचमुच आपने भूत भगा दिए. यह रहे फीस के पच्चीस रुपये. आशा है आज शाम तक आप वह मंतर लिखकर हमें भेज देंगे!
ठीक है!
शाम को...
अरे लंबू, यह तो "भूत भगाओ" मंतर आ गया!
जरा उस बालक को बोलो इसे पढ़े तो सही!
उस में लिखा है— "रात का खाना कम खाओ और ऐसी चीजें मत खाओ जो जल्दी हज़म न हों!"
"अगर मैं कल खाने में तुम्हारा हाथ न बटाता, तो तुम्हें फिर बद हज़मी हो जाती. और याद रखो, बद हज़मी से ही रात को डराने वाले सपने आते हैं!"
हाय! हमारे पच्चीस रुपये!
खामोश, लंबू! वरना लोग फिर हमें मूर्ख कहेंगे!

गजराजसिंह खर्ब, रानीखेड़ा व वामिक महमूद, इंदौर :

अगर समय पर गधा बाप बनने से इनकार कर दे, तो क्या करना चाहिए?

माताजी को बुला लाना चाहिए—बेलन सहित!

गौरीशंकर 'आशिक', दिल्ली :

रिश्वत का जन्म कैसे और कब हुआ और सर्वप्रथम संसार में किसने रिश्वत ली?

जन्म तब हुआ जब हथेली खुजलाई; सबसे पहला वह जिसकी हथेली सबसे पहले खुजलाई!

ओंकारप्रसाद नेमा, रहली :

मुझे 'पराग' में भंवरा कहीं नहीं दिखाई देता?

तो फिर काले अक्षरों की जगह तुम्हें क्या नजर आता है—भैंस!

अरुणकुमार सिन्हा, सेक्षपुरा :

उगते हुए सूर्य की पूजा सभी करते हैं, डूबते हुए सूर्य की कोई नहीं! क्या यह मिसाल आपके लिए ठीक रहेगी?

अभी बाकी दो पहर और रथ दौड़ा लेने दो, फिर बताएंगे!

परवीन निजाम, राउरकेला :

पिताजी कहते हैं कि 'बड़ों को जवाब न दो'. उधर दादी हमेशा अपने पत्र में लिखती हैं कि 'परवीन जवाब नहीं देती'. बताइए क्या करूं?

कम से कम अपनी बुद्धि को तो जवाब न दो!

भूषणलाल गुप्ता, जम्मू :

गप्पें हांकने और बैलगाड़ी हांकने में क्या अंतर है?

बैलगाड़ी में गाड़ीवान सो जाता है और बैल चलते रहते हैं—गप्पें हांकने में गाड़ीवान कहीं-का-कहीं पहुंच जाता है, और बैल बेचारे सोते ही रह जाते हैं!

कु. रीटा सिंह, नई दिल्ली :

नारी की सहानुभूति हार को भी जीत बना देती है—कैसे?

शत्रु पर बेलन-प्रहार के द्वारा!

विजयकुमार, भोपाल :

मुर्गे के समान मुर्गी बांग क्यों नहीं देती?

इतना क्या कम है कि सोते से जगाने के जुर्म में वह मुर्गे के बांग देते वक्त उसकी पीठ पर दुहत्थड़ रसीद नहीं करती!

प्रीतमोहनजीत सिंह, हावड़ा :

अगर इनसान के हाथ में तकदीर और वक्त दोनों आ जाएं, तो?

तो वह दोनों को गंवाने की तरकीब पहले ही निकाल लेगा!

सुदामालाल अनदाणी, वर्धा :

'दो या तीन बच्चे बस' . . . .यह मामला अगर सन् २६० ईसवी पूर्व में होता, तो सम्राट अशोक जैसे वीर पुत्र कैसे पैदा होते, जब कि वह अपने माता-पिता की चौदहवीं संतान थे?

और महात्मा गांधी, पं. नेहरू व शास्त्रीजी?

रमेश ठारवानी निरंकारी, जबलपुर :

'बच्चे, मन के सच्चे! बच्चे भारत देश का भविष्य सुधारेंगे! बच्चे कल के भारत की तकदीर हैं!' फिर उन बच्चों की पैदाइश पर बंदिश क्यों लगाई जा रही है?

खाना, कपड़ा, और स्कूल, ये भी साथ ही पैदा हों, तो चौदह में भी कोई हरज नहीं!

धर्मो पेशगानी, इंदौर :

मैंने सुना है कि आप 'हिंदी-व्याकरण' में दक्ष हैं. तो बताइए 'राष्ट्रपति' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होता है?

इसी लिए तो संविधान में एक राष्ट्रपति रखा गया है, वरना जोड़ा न रखते!

हरभजनसिंह, रामगढ़ कैंट :

वास्तविकता कब कहानी बनती है?

जब उसे पूरी जाने बिना ही कहानीकार उसे कल्पना के पंखों पर ले उड़ता है!

काशीनाथ राम, दरभंगा :

कहा जाता है कि 'चिराग तले अंधेरा', लेकिन बल्ब के नीचे उजाला क्यों होता है?

जब यह कहावत बनी थी तब बीया उल्टा नहीं लटक सकता था!

बच्चों के अटपटे प्रश्नों के चटपटे उत्तर हम इस स्तंभ में छापते हैं. जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदर-से पुरस्कार मिलेंगे. जिन्हें पुरस्कार मिले हैं उनके नाम के पहले ★ का निशान लगा है. प्रश्न कार्ड पर ही भेजो और एक बार में तीन से ज्यादा मत भेजो. इस स्तंभ में पहेलियों के उत्तर नहीं दिए जाएंगे. पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई-१.

शरतकुमार चांडक, काटोल :

मैं आपके विरोध में दूसरा मासिक 'मधुमक्खियां' निकालूं, तो?

हम अपने 'पराग' में सब मधुमक्खियों की दावत करके उन्हें अपने पक्ष में कर लेंगे!

भारतभूषण अग्रवाल, नई दिल्ली :

समय की गति क्या है?

अरे, तुमने अब तक घड़ी देखनी भी नहीं सीखी!

अनु श्रीवास्तव, लखनऊ :

अगर मच्छर सैबरजेट है, तो सैबरजेट क्या है?

वाह क्या कहावत पल्टी है : "काला मच्छर जैट बराबर!"

रतन आर. गुप्ता, अमरावती :

जिस पर न कभी फूल खिलते हों, न पत्ते, वह डाल अपने आपको क्या समझती होगी?

भारमुक्त!

परमजीतसिंह, दिल्ली :

मेज को चारपाई क्यों नहीं कहते, जबकि दोनों के चार-चार पाये होते हैं?

यही तो, कोई भी लड़कों को आदमी नहीं कहता!

जयगोविंद मिश्र, बांधा बाजार :

इनसान गल्तियों को जान कर भी गलती क्यों करता है?

क्योंकि गलती इनसान से ही होती है!

अरुण भागवत, अकोला :

अगर इस दुनिया में मनुष्य के शरीर के 'स्पेयर पार्ट्स' मिलते, तो क्या होता?

'ओरिजिनल' आदमी को कौन पूछता!

रवींद्र सोडी, कलकत्ता :

मोटे आदमी हंसोड़ क्यों होते हैं?

क्योंकि हंसोड़ होने के कारण ही वे मोटे होते हैं!

गोविंदप्रसाद नेमा, सिवनी :

हमें परीक्षा-भवन में एक दूसरे से प्रश्नों के उत्तर पूछने और बताने की अनुमति क्यों नहीं दी जाती, जिससे हम लोगों में बचपन से ही परस्पर सहयोग और एक दूसरों की कठिनाइयों में काम आने की भावना पैदा हो जाए?

और दूसरों पर निर्भर रहने की भी!

ओमप्रकाश धारीवाल, लश्कर :

संपादक जी बड़े कसाई,
आंख मींच बंदूक चलाई!
फिर भी चूहिया मर ना पाई,
हमने उनकी हंसी उड़ाई!

बंदूक में गोली ही गोल थी, मेरे भाई!

निशा गोयल, लखनऊ :

मेरा नाम निशा है. जब मेरे आने का समय होता है, तो लोग मुझे देखते ही सो जाते हैं—तो मैं क्या करूं?

फौज में भरती हो जाइए, सब दुश्मन सो जाया करेंगे!

पिंकी पुरी 'चिटू', पठानकोट :

आपने काफी समय 'पराग' की संपादकी की है, क्या अब आप हमें भी अवसर देंगे?

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'—पहले अपने चिकने पत्ते तो दिखाइए!

'सुश्रा' कृष्णकांत शर्मा, जयपुर :

कुंवारी लड़कियों के नाम के आगे 'सुश्री' शब्द काम में लाते हैं, तो कुंवारे लड़कों के नाम के पहले 'सुश्रा' क्यों नहीं लगाते?

आपके नाम के पहले लगा दिया है—अब तो खुश?

विनोदपुरी, खतौली :

मूर्ख किस समय काम आता है?

जब बुद्धिमानों के प्रश्न खतम हो जाते हैं!

★ **दिनेशचंद्र दीक्षित, द्वारा—गोविंदप्रसाद दीक्षित, बंगलाबाजार, पो० भदरुख, लखनऊ :**

जब दिमाग कमजोर हो जाए, तो कौन-से 'विटामिन' का प्रयोग करना चाहिए?

"पराग"!

★ **सुरेशचंद्र दत्ता, द्वारा—मेहता टेक्सटाइल्स, पो० खलीलाबाद, जिला बस्ती (उ० प्र०) :**

आप जवाब देते समय किसकी याद में खो कर जवाब देते हैं?

'पराग' के नटखट पाठकों की! ●

हास्य कहानी

डेपुटेशन

दादाजी ने मामले की जांच की और इस नतीजे पर पहुंचे कि सचमुच राजू ने पिंकी की गुल्लक में से एक रुपया निकाला है.

उन्होंने फैसला सुनाया, "राजू पिंकी को एक के बदले दो रुपये लौटाएगा. साथ ही उसे यह चेतावनी दी जाती है कि अगर भविष्य में ऐसी हरकत वह दुबारा करेगा, तो उसे और भी कठोर सजा दी जाएगी."

जिस समय यह फैसला सुनाया गया, दादाजी ने सभी बच्चों को बुला लिया था, ताकि वे अपनी आंखों से देख लें कि चोरी का परिणाम क्या होता है.

"दादाजी, आपका फैसला कोई मानता तो है नहीं," पप्पू फैसला सुनकर रूखे स्वर में बोला.

दादाजी लड़खड़ा गए. तमककर बोले, "क्या मतलब! कौन नहीं मानता मेरा फैसला?"

"आपको याद है, दादाजी, पिछले महीने आपने बबली को सजा दी थी कि..."

"हां, याद है. सब याद है. क्या बबली ने तुम लोगों को पांच-पांच टाफियां नहीं खिलाईं?"

"अरे पांच! उसने तो एक-एक भी नहीं खिलाई, दादाजी!" पप्पू ने बताया.

"क्यों रे, बबली! क्या मेरे कान सच सुन रहे हैं?" दादाजी ने बबली को डपटा.

"द...द...दादाजी..." बबली हकला गया.

"द...द...क्या करते हो! ठीक से बोलो."

बबली संभल कर बोला, "जिए, दादाजी, जब आपने फैसला सुनाया था, टाफी चार पैसे की एक आती थी. फिर टाफियों पर टैक्स लग गया और उनकी कीमत छह पैसे की एक हो गई. मम्मी ने मेरा टाफी-एलाउंस बढ़ाया नहीं, आप मम्मी से मेरा जेबखर्च बढ़वा दीजिए ताकि मैं अपनी सजा भुगत सकूं."

"टाफियों पर टैक्स लग गया है?" दादाजी ने पूछा.

"हां, दादाजी, वित्त मंत्रीजी कहते हैं कि टाफियां केवल अमीरों के बच्चे खाते हैं. उन पर टैक्स लगना ही चाहिए." टिकू ने मुरझाए स्वर में कहा.

दादाजी चिंतित हो गए. डेढ़ मिनिट वह लगातार सोचते रहे. फिर बोले, "हम यह टैक्स हटवा देंगे."

"आप यह टैक्स कैसे हटवा सकते हैं, दादाजी?" बच्चों ने हैरानी से पूछा.

"मैं अकेला थोड़े ही कुछ कर सकता हूं. इतने बड़े काम के लिए तो हमें बच्चों का एक डेपुटेशन वित्त मंत्रीजी के पास ले जाना होगा." दादाजी बोले.

"यह डेपुटेशन कैसा होता है, दादाजी?" कई बच्चों ने पूछा.

"अरे! तुम लोग डेपुटेशन जैसे शब्द से अनजान हो! कमाल है! किसी बात का विरोध करने के लिए जो दल मंत्री जैसे बड़े आदमी के पास जाए उसे डेपुटेशन कहते हैं. समझे?"

"दादाजी, इस डेपुटेशन का जन्म कैसे हुआ?" पिंकी पूछ बैठी.

"डेपुटेशन का इतिहास बहुत पुराना है. जब से मनुष्य का जन्म हुआ तभी से डेपुटेशन भेजने का चलन चला आ रहा है. रामायण तो तुमने पढ़ी या सुनी ही होगी?" दादाजी ने पूछा.

"हां, दादाजी!" बच्चों ने स्वीकार किया.

"जब रामचंद्रजी को पता लगा कि सीताजी को रावण उठा ले गया है, तब उन्होंने हनुमानजी को डेपुटेशन के रूप में लंका भेजा था. इस डेपुटेशन ने लंका में आग लगा दी थी. यह तुम रामलीला में भी देखते हो."

"यानी, दादाजी, हनुमानजी वेश बदलकर डेपुटेशन बन गए थे?" नन्ही आशा ने हैरानी से पूछा.

"नहीं, तुम्हारी समझ में बात नहीं आई. तुम अभी छोटी हो. बबली, तुम्हें डेपुटेशन का अर्थ पता चला?"

"हां, दादाजी."

"कोई उदाहरण दे सकते हो?"

"दादाजी, सोचना पड़ेगा."

"सोचो, सोचो. पूरा इतिहास डेपुटेशनों से भरा पड़ा है," दादाजी ने बढ़ावा दिया.

"इतिहास में तो मैं कमजोर हूं, दादाजी, पर एक दूसरे डेपुटेशन का उदाहरण दे सकता हूं."

"तुम कुछ भी कहो. मुझे तो यह देखना है कि डेपुटेशन का अर्थ तुम्हारी अकल में ठीक तरह से समा गया है या नहीं."

"दादाजी, कल टिकू और पप्पू में लड़ाई हुई थी. पप्पू की आंख सूज गई तो पप्पू की मम्मी डेपुटेशन बनकर उलाहना देने टिकू की मम्मी के पास गई थीं."

"नहीं, बबली, इसे हम डेपुटेशन नहीं कह सकते. डेपुटेशन उलाहना देने नहीं जाता. वह जाकर शांति से बात करता है."

"पर, दादाजी, हनुमानजी ने तो लंका में आग लगाई थी!" पिंकी ने शंका की.

"दरअसल यह उनकी गलती थी. हनुमानजी गुस्से में भूल गए कि वह लड़ने नहीं, डेपुटेशन बनकर लंका में आए हैं."

"दादाजी, इसमें सारा कसूर रावण का है. उसने पहले डेपुटेशन की पूंछ में आग क्यों लगाई? अपनी जान बचाने के लिए डेपुटेशन ने जो उछल-कूद की, तो लंका में आग लग गई." कूकी ने हनुमानजी का पक्ष लिया.

"इस उदाहरण को छोड़ो. पिंकी, तुम कोई बढ़िया-सा उदाहरण देकर डेपुटेशन का अर्थ स्पष्ट करो," दादाजी बोले.

"जरूर, दादाजी! कुछ दिन हुए पुलिस के सिपाहियों का एक डेपुटेशन प्रधान मंत्री के घर के आगे धरना देकर बैठ गया था. इस डेपुटेशन ने भूख-हड़ताल भी की थी," पिंकी बोली.

"नहीं, पिंकी, वह डेपुटेशन नहीं है. वे लोग हड़ताली कहे जाएंगे. हड़तालियों को तो आजकल कोई पानी के लिए भी नहीं पूछता. और डेपुटेशन तो जहां भी जाता है, वहां स्वागत पाता है."

"कैसा स्वागत पाता है, दादाजी?" बबली जैसे सोए से जागा.

"भव्य स्वागत!" दादाजी ने दोहराया.

"हरेक डेपुटेशन—चाहे वह बच्चों का ही क्यों न हो?"

"बिल्कुल!"

"यदि हम डेपुटेशन बनकर जाएंगे तो हमारा भी भव्य स्वागत किया जाएगा?" बबली ने अविश्वास से पूछा.

"अब मैं वही बात कितनी बार दोहराऊं?" दादाजी कुछ नाराज होकर बोले.

"दादाजी, नाराज मत होइए. बात ही ऐसी मीठी है कि बार बार सुनने को जी चाहता है. प्लीज थोड़ा और प्रकाश डालिए कि यह स्वागत कैसा होगा? सूखा या गीला?" बबली ने होंठों पर जीभ फिराते हुए पूछा.

"तुम जिद करते हो, तो बताता हूं. जाते ही हमें कोका-कोला या शर्बत मिलेगा. फिर हम मंत्रीजी से बातचीत करेंगे. बातचीत के बाद वह हमें चाय पिलाएंगे. चाय के साथ समोसे तो होंगे ही. रसगुल्ला या बर्फी भी होगी."

"पर, दादाजी, खोए की बनी मिठाइयों पर तो प्रतिबंध लगा हुआ है!" मधु ने शंका की.

"बेशक लगा हो. डेपुटेशन का स्वागत करने के लिए वित्त मंत्री कहीं न कहीं से मिठाई का प्रबंध अवश्य करेंगे," दादाजी ने पूरे विश्वास से कहा.

"दादाजी, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि शाम को खेलने के बजाए हम किसी न किसी मंत्री के घर डेपुटेशन बनकर पहुंच जाया करें." मृदु ने कठिनाई से अपनी लार टपकने से रोकी.

उसके मन की बात ताड़कर दादाजी हंसे. बोले—"डेपुटेशन ले जाने का कोई कारण भी तो होना चाहिए?"

"दादाजी, अब हमें समय नष्ट नहीं करना चाहिए. हम पंद्रह मिनिट में कपड़े बदलकर तैयार हुए जाते हैं. तब तक आप भी नहा-धो लें. वित्त मंत्रीजी के घर तो हो आएं," बबली बोला.

"पर हमें पता नहीं कि इस समय वह घर पर ही है या दौरे पर. यदि वह घर न मिले तो यूं ही परेशानी होगी." दादाजी ने उलझन बताई.

"लेकिन, दादाजी, डेपुटेशन का स्वागत करने के लिए कोई न कोई तो उनके घर में होगा ही. डैडी का कोई मेहमान घर आए और डेडी घर पर न हों, तो मम्मी उनके मेहमान को चाय-पानी को पूछती ही है." "नहीं, पहले मैं फोन पर वित्त मंत्रीजी से समय लूंगा, फिर मैं तुम्हें ठीक ठीक प्रोग्राम बताऊंगा." दादाजी ने अंतिम निर्णय दे दिया.

फिर यह मीटिंग खत्म हुई.

•

अगले दिन दादाजी ने फिर बच्चों को अपने घर पर इकट्ठा किया. उनका चेहरा प्रसन्नता से खिला पड़ रहा था. बोले, "मैंने फोन पर मंत्रीजी के पी. ए. से बात कर ली है. हमारा डेपुटेशन रविवार की शाम को पांच बजे वित्त मंत्रीजी के घर जा रहा है."

"दादाजी जिंदाबाद!" बच्चों ने नारा लगाया.

दादाजी ने इस बेवक्त के नारे का बुरा नहीं माना. बोले, "मैं तुम्हें अब कुछ बातें समझा देना जरूरी समझता हूं."

बच्चे दादाजी के और पास खिसक आए.

दादाजी ने पूछा, "मैं कुछ कहूं, इससे पहले मुझे तुम बताओ कि हमारे डेपुटेशन का उद्देश्य क्या है?"

"जलपान करना!" राजू ने दिल की बात कही.

दादाजी बिगड़ उठे, "यह कोई हमारा उद्देश्य है! यह तो वित्त मंत्रीजी का कर्तव्य है."

बच्चे दादाजी की बदली मुद्रा देखकर सहम गए. दादाजी ने ललकार कर पूछा, "है कोई जो बता सके कि हम क्यों वित्त मंत्रीजी के घर जा रहे हैं?"

किसी बच्चे ने मुंह नहीं खोला. दादाजी दुखी होकर स्वयं ही बोले, "इतनी जल्दी सब भूल गए? हमारा उद्देश्य टाफियों पर से टैक्स हटवाना है."

"दादाजी, यह तो याद ही नहीं रहा था." बच्चों ने लज्जित होकर अपनी भूल स्वीकार की.

•

दादाजी ने कहा, "देखो, यदि मंत्रीजी तुमसे कुछ पूछें तो बहुत ही सोच-समझकर जवाब देना. नहीं तो लेने के देने पड़ सकते हैं. माना वह पूछते हैं—'बच्चो, तुम क्या खाना पसंद करते हो?' तो सब कह देना—'जी, टाफियां!' यदि किसी ने गोलगप्पे कह दिया और कल को गोलगप्पों पर टैक्स लग गया, तो मुझे दोष मत देना."

"दादाजी, हम ध्यान रखेंगे." बच्चों ने कहा.

"ठीक! वहां पर अखबारों के फोटोग्राफर भी बैठे होंगे. जब वे फोटो लेने लगें तो कोई बच्चा मेरे सामने न आए. वह फोटो अखबार में छप सकता है." दादाजी ने यह चेतावनी कड़े शब्दों में इस अंदाज से दी जैसे कह रहे हों, 'देखो, वहां खोमचेवाले भी बैठे होंगे, कोई बच्चा उनसे चीजें खरीदकर न खाए!'

"दादाजी, आजकल मौसम मनमौजी किस्म का है. यदि रविवार को वर्षा होने लगे, तो भी हम तैयार हो जाएं क्या?" पप्पू ने पूछा.

दादाजी ने हाथ नचाते हुए घोषणा की, "सब बच्चे कान खोलकर सुन लें कि गरमी-सरदी-आंधी-तूफान-वर्षा-पानी-भूचाल हर हालत में हमारा डेपुटेशन जाएगा और अवश्य जाएगा. अच्छा और कोई शंका?"

"दादाजी, हम बीस जने हो जाएंगे. हो सकता है मंत्रीजी के घर कप-प्लेट कम हों और वह शरम के मारे हमें चाय ही न पिलाएं. मैं तो कहता हूं कि केवल पांच-छह बड़े बड़े बच्चे ही डेपुटेशन में जाएं." टिकू ने सुझाव दिया.

छोटे बच्चों में हो-हल्ला मच गया. आशा तो दादाजी के पैरों से लिपटकर रोने ही लगी—"दादाजी, हम डेपुटेशन में जरूर जाएंगे. . . यदि कप-प्लेट कम पड़ेंगे तो मंत्रीजी पड़ोस में से मांग लाएंगे. ज्यादा मेहमान आने पर मधु की मम्मी भी हमारे घर से कप-प्लेट मांग ले जाती है!"

आखिर दादाजी बोले, "अच्छा अच्छा! हम सभी को ले जाएंगे."

"दादाजी, मैंने कहीं पढ़ा है कि हमारी योजनाओं पर जो अरबों रुपये खर्च होते हैं, सब वित्त मंत्रीजी करते हैं," बबली ने पूछा.

"बिल्कुल! उनके लिखने से ही रिजर्व बैंक रुपया दे देता है. सिर्फ बैंक ही तो नोट छापता है. उ रुपयों की क्या कमी!"

"दादाजी, यह वित्त मंत्रीजी का कर्त्तव्य है न कि वह देश की जनता के आर्थिक कष्ट दूर करें?"

"तुम कहना क्या चाहते हो?" दादाजी ने झल्लाकर पूछा.

"मैं उनसे किसी जरूरी काम के लिए चालीस रुपये लेना चाहता हूं," बबली ने असली बात बताई.

"तुम्हारा क्या मतलब है, वह सबको रुपया बांटते फिरते हैं!"

"नहीं, दादाजी, वह कंपनियों को करोड़ों रुपया उधार देते हैं. मैं भी उनसे उधार ही लेना चाहता हूं. मैं उन्हें चार रुपये हर महीने मनी-आर्डर कर दिया करूंगा. इस तरह दस महीने में उनका मेरा हिसाब साफ हो जाएगा!" बबली ने अपनी योजना बताई.

दादाजी कुछ सोचने लगे. बच्चों को लगा कि दादाजी बबली का काम करवा देंगे. सब में खुसर-पुसर शुरू हो गई.

"दादाजी, बीस रुपये तो मुझे भी चाहिए थे," राजू ने कहा.

"दादाजी, जब मंत्रीजी के पास खरबों रुपये पड़े हैं, तो आप स्वयं क्यों नहीं चार-पांच सौ रुपये मांगकर हममें बराबर बराबर बांट देते?" पप्पू ने सुझाया.

अब दादाजी भड़क उठे. बोले, "डेपुटेशन में जाकर तुम लोग अपनी अपनी नहीं चला सकते. जिसे उनसे कर्जा लेना हो, वह कभी अकेले जाकर बात कर ले. डेपुटेशन के सदस्य टाफियों के सिवाय और किसी संबंध में चर्चा नहीं करेंगे. समझे?"

"जी." बच्चों ने सिर झुकाए हुए उत्तर दिया. बबली का चेहरा कुम्हला गया था.

"दादाजी, मंत्री जी ने कोई कुत्ता तो नहीं पाल रखा है? हाय! मुझे तो कुत्तों से बहुत डर लगता है!" मधु ने पूछा.

"इस बात की मैं कोई गारंटी नहीं लेता. जहां तक मुझे पता है, उनके पास कोई कुत्ता नहीं है. अब मैं किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दूंगा. तुम सब यहां से एकदम 'गेट आउट' हो जाओ." कहते हुए दादाजी ने अपने माथे का पसीना पोंछा. बच्चों के प्रश्न उनके दिमाग चाट गए थे. जोरों से सिर-दर्द होने लगा था.

बच्चे चले गए.

यों दादाजी दिल ही दिल में बड़े खुश थे, पर वह अपनी खुशी का धुंधला-सा भी दर्शन बच्चों को नहीं होने देना चाहते थे. उनकी आंखों के आगे अखबार का वह पृष्ठ घूम जाता था, जिस पर वित्त मंत्री के साथ उनकी फोटो छपी होगी. पीछे बच्चे खड़े होंगे. नीचे लिखा होगा—'वित्त मंत्री और दादाजी टाफियों पर से टैक्स हटाने के संबंध में बातचीत करते हुए.' देश के कोने कोने में लोग तसवीर देखेंगे और आपस में बातें करेंगे कि—यह दादाजी कौन हैं?

दादाजी बच्चों पर यह रोब डालना चाहते थे कि डेपुटेशन ले जाने में उन्हें कतई रुचि नहीं है. डेपुटेशन ले जाने की यदि वह तकलीफ कर रहे हैं, तो सिर्फ बच्चों

रिश्ते की नई खोज!

—आनंद

"मम्मी, जब चंदा हमारे मामा हैं, तो डैडी के साले हुए न?"

की भलाई के लिए.

राजू और मुन्नू ने मम्मी से जिद की कि हमारे गरम कपड़े ड्राइ-क्लीन करवा दो. मम्मी ने उन्हें डांटा कि अभी पिछले हफ्ते ही तो सारे कपड़े ड्राई-क्लीन करवाए गए थे. राजू, मुन्नू अड़े—'तो क्या हुआ? हमें अब डेपुटेशन में जाना है.' दादाजी ने यह कपड़ों का झगड़ा सुना, तो चौंक गए. तुरंत ही उन्होंने सब बच्चों को बुला भेजा. पूछा, "बच्चो, तुम डेपुटेशन में कैसे कपड़े पहनकर जा रहे हो?"

"दादाजी, मैं तो बड़े फूलों के प्रिंट वाली टेरेलिन की फ्राक पहनूंगी," मधु बोली.

"मैं गरम सूट पहनूंगा, दादाजी," बबली ने बताया.

"दादाजी, मैं जापानी सिल्क की फ्राक पहनूंगी. वही, जो मैं बड़े बड़े मौकों पर ही पहनती हूं," पिंकी ने कहा.

दादाजी ने माथा पीट लिया. सिर धुनते हुए बोले, "फिर तो जा चुका डेपुटेशन और हो गया टैक्स माफ! मूर्खों जैसे कपड़े पहनोगे, तो वित्त मंत्रीजी हमारी बात ही नहीं सुनेंगे. कह देंगे कि जब तुम्हारे मां-बाप तुम्हारे कपड़ों पर सैकड़ों रुपये खर्च कर सकते हैं, तो तुम्हें टाफियों के लिए भी दो-चार रुपये फालतू

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

कठानी

एक चूज़े की जीत

टोले-मुहल्ले का कोई भी ऐसा मुर्गा नहीं था, जिससे वह मुर्गा एक बार नहीं लड़ चुका हो. वैसे कुछ मुर्गों की आदत लड़ने की होती है, मगर वह मुर्गा सचमुच बड़ा लड़ाका था. बिना किसी बात के मुहल्ले के हर मुर्गे से हर रोज, बिला नागा, वह लड़ बैठता था. ऐसी बात नहीं थी कि मुहल्ले के मुर्गों पर उसकी धाक जमी हो, जितना लहूलुहान वह दूसरे मुर्गे को करता, उतना ही खुद भी हो जाता. बस उसकी एक आदत थी कि वह हर मुर्गे से रोज लड़ता था.

उसकी इस आदत से परेशान होकर मुहल्ले के मुर्गों ने एक मीटिंग की. क्योंकि उन मुर्गों में कुछ शरीफ मुर्गे ऐसे भी थे, जो उससे बेहद परेशान हो गए थे. एक बुजुर्ग मुर्गे ने कहा, "मसल मशहूर है कि जहां दस बरतन होते हैं, वे आपस में बजते-खटकते ही हैं. लेकिन यहां एक दिन की बात हो तो बर्दाश्त भी कर ली जाए, यह तो हर रोज का रोना है."

आखिर सबने मिलकर यह फैसला किया कि उस मुर्गे की पत्नी से उसे समझाने के लिए कहा जाए. उसकी पत्नी एक नेकदिल मुर्गी थी. इस पर भी अगर वह न माने तो उसका और उसके परिवार के सभी सदस्यों का हुक्का-पानी बंद कर दिया जाए.

दूसरे ही दिन उस मुर्गे की पत्नी ने उसे समझाते हुए कहा, "अब आप छह चूजों के बाप हो गए हैं. आपको यह छिछोरपन इस उम्र में शोभा नहीं देता!"

मुर्गे ने पत्नी की बात को अनसुनी करते हुए कहा, "तुम चाहती हो, मैं सारे दिन दरबे में चुपचाप दुबका पड़ा रहूं. अगर कभी बाहर निकलूं और मुहल्ले का कोई मुर्गा मुझे आंखें दिखाए, तो आंखें नीची किए दुम दबाए कायरों की तरह वापस दरबे में लौट आऊं. तुम यह कान खोलकर सुन लो कि मुझसे यह सब नहीं होने का है!"

पत्नी ने चिढ़कर कहा, "ठीक है, आपकी मरजी! मेरा काम समझाने का था, वह मैंने पूरा कर दिया. अब आप चाहे रोज अपनी चोंच लड़ाओ, मुंह फुड़वाओ या सिर तुड़वाओ. आज के बाद मैं आपसे इस बारे में कुछ भी नहीं कहूंगी."

"मैं कोई चूजा नहीं हूं. अपना भला-बुरा सब समझता हूं. मुझे लेक्चर सुनाने की जरूरत नहीं है."

मुर्गा पत्नी से मुंह फुलाकर बाहर निकल गया.

इधर मुर्गे ने अपनी आदत नहीं बदली और दूसरी तरफ मुहल्ले के सारे मुर्गों ने मिलकर उसका और उसके परिवार वालों का हुक्का-पानी बंद कर दिया. इसके अलावा उन्होंने यह भी तय किया कि अगर वह मुर्गा

मुहल्ले के किसी भी मुर्गे से लड़ने के लिए आए, तो सारे मुर्गे उस पर झपट पड़े.

मुर्गे के छह चूजों में से सबसे बड़ा चूजा स्कूल में पढ़ने जाता था. उस दिन स्कूल में उसके साथी चूजों ने उसके साथ बात तक नहीं की. वे उससे दूर दूर रहे. उसे ऐसा लगा मानो उसका अध्यापक भी उसे अच्छी नजरों से नहीं देख रहा हो. यह वह जानता था कि यह सब उसके पिता की वजह से है. मगर उसको स्कूल आने से कोई नहीं रोक सकता था, क्योंकि आजाद भारत में पढ़ने का सबको समान अधिकार है. फिर भी अपनी इस तौहीन से उसे बहुत आत्मग्लानि हुई.

वह सोचने लगा, अगर समाज में अपने परिवार वालों की खोई हुई इज्जत फिर से हासिल करनी है, तो पापा को सही रास्ते पर लाना होगा, हालांकि इसमें माताजी भी असफल साबित हुई हैं.

उस दिन चूजे का मन पढ़ाई में नहीं लगा. वह अपने पापा को सही रास्ते पर लाने की तरकीबें सोचने लगा.

एक दिन की बात है. अपनी योजना के मुताबिक नन्हा चूजा अपना मूड बिगाड़कर स्कूल से घर पहुंचा. घर पहुंचते ही वह अपने पापा के सामने अपने छोटे बहन-भाइयों और पड़ोसी चूजों के साथ बिना किसी वजह के लड़ने-झगड़ने लगा. उस दिन उसके व्यवहार में अचानक तबदीली आ गई थी. सारे परिवार वालों को इस पर बड़ा ताज्जुब हुआ. उसके पापा को और भी ताज्जुब हुआ. सब सोचने लगे—आखिर नन्हे चूजे को हुआ क्या है? क्या इसका दिमाग खराब हो गया है या यह एक दिन में ही अचानक झगड़ालू आदत का बन गया है?

थोड़ी देर तक मुर्गा अपने चूजे की ये हरकतें देखता रहा. उसने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा, "देख रही हो, आज इस चूजे को हुआ क्या है? सबसे लड़ रहा है, झगड़ रहा है!"

मुर्गी ने तुनककर कहा, "मैं तो इसे बहुत देर से इसके लिए मना कर रही हूं, लेकिन यह मेरी सुनता ही नहीं. और फिर आप भी तो मेरी कोई बात नहीं मानते और न सुनते हैं! जब आप ही ऐसा करते हैं, तो आपके बेटे से क्या उम्मीद की जा सकती है. अब आप ही उसे इसके लिए डांटिए."

मुर्गा अपनी पत्नी की बात सुनकर थोड़ी देर तक

खामोश रहा, फिर बोला, "मैं उसे ऐसी बुरी आदत छोड़ने के लिए जरूर कहूंगा. मगर आज कुछ नहीं."

मुर्गी की समझ में मुर्गे की बात नहीं आई. फिर भी उसने कुछ नहीं कहा.

दूसरे दिन से परिवार के सभी सदस्यों ने देखा कि मुर्गे की आदत में काफी सुधार हो रहा है. उसने मुहल्ले के उन समस्त मुर्गे और मुर्गियों से अपने संबंध मधुर कर लिए हैं, जिनसे किसी वक्त वह रोजाना लड़ा-झगड़ा करता था.

मुर्गे के स्वभाव में अचानक इस परिवर्तन से सब हैरान थे. इधर मुर्गे की आदतों में निरंतर सुधार हो रहा था और दूसरी तरफ नन्हा चूजा अपनी हरकतें दिनों-दिन तेज करता जा रहा था. आखिर मुर्गे से यह ज्यादा दिन तक न देखा जा सका. एक दिन उसने नन्हे चूजे से कहा, "या तो तुम अपनी यह आदतें छोड़ दो, वरना तुम्हें इसका दंड भुगतना होगा. तुम्हारी इस आदत को देख कर मुझे भी अब यह अच्छी तरह मालूम हो गया है कि इस तरह बिना बात हर किसी से लड़ने-झगड़ने की आदत बिलकुल अच्छी नहीं है. इसी लिए मैंने अपनी इस आदत को छोड़ दिया है और मैंने उन सबसे अपने संबंध सुधार लिए हैं, जिनसे मैं अक्सर लड़ा करता था."

फिर मुर्गे ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम्हें याद है, जब तुमने मुझे चूजे को समझाने के लिए कहा था, तो मैंने उस दिन उसे समझाने से इनकार किया था. जानती हो मैंने ऐसा क्यों किया था?"

मुर्गी ने कहा, "नहीं."

मुर्गा बोला, "मैं खुद इसी बुरी आदत का शिकार हो गया था, इसलिए मुझे अपने चूजे को उस आदत से मना करने का कोई हक नहीं था. जो खुद बुरे काम करता है, उसे दूसरे आदमी को बुरे काम करना छोड़ देने की सीख देने का कोई अधिकार नहीं है. इसलिए

रुमीदुल्ला खां

मैंने पहले अपनी गंदी आदत को सुधारा. और अब मैं अपने चूजे को यह आदत छोड़ देने के लिए डांट भी सकता हूं."

अपने पापा की यह बात सुनकर नन्हा चूजा खुशी से उछल पड़ा. उसने पापा से कहा, "मैं तो सिर्फ ढोंग कर रहा था, ताकि आप अपनी बुरी आदत को समझें और सुधारें. मैं जिन चूजों से आज तक लड़ा-भिड़ा, उन्हें मैंने यह बात समझा दी थी कि मैं पापा की गंदी आदत छुड़ाने के लिए ही यह सब कर रहा हूं."

मुर्गा और मुर्गी दोनों अपने चूजे की अक्लमंदी देखकर दंग रह गए और उन्होंने उसे अपने गले से लगा लिया. ●

अनुवाद शाखा, विधि विभाग, राजस्थान
सचिवालय, जयपुर–५

भोलू भाई की भूल भुलैया-१४

वे पागल थे या नहीं?

भोलूभाई उस दिन हंसी-खुशी घर से चले थे. स्कूल से मिला 'होम वर्क' पूरा कर लिया था, इसलिए प्रसन्नचित्त थे. कोई समस्या दिमाग में फंसी हुई नहीं थी, इसलिए मजे से रास्ते में मूंगफली चबाते हुए चले जा रहे थे.

कुछ दिनों से उन्हें एक नया शौक चर्राया था— यानी वह राह चलते लोगों की बातें सुना करते थे. कुछ तो काफी ऊलजलूल होती थीं—जिससे वह मन ही मन खूब हंसा करते थे.

उस दिन क्या हुआ कि वह दो ऐसे आदमियों के पीछे लग लिए, जो खरामा खरामा चले जा रहे थे. उनमें से एक कह रहा था :

"भई, शंकर, भला कोई इस बात पर विश्वास करेगा कि मुझे रोज लगभग १० किलोमीटर का चक्कर पड़ जाता है? अरे, न मैं ट्राम, बस, मोटरकार, यहां तक कि किसी पहिए वाली गाड़ी पर चढ़ता, न पैदल चलता, न दौड़ता, न किसी जानवर की पीठ पर चढ़ता, न पानी के ऊपर किसी तरह की नाव या जहाज में सफर करता. कोई गली या सड़क मुझे पार नहीं करनी पड़ती, न सफर में कोई पेड़-पौधा या सीनरी ही दिखाई देती. अकेला भी नहीं होता. साथ में अक्सर दूसरे लोग रहते हैं. फिर भी, भाई, थक बहुत जाता हूं. रोज बीस मील का सफर करना कोई हंसी-खेल थोड़े ही है!"

भोलूभाई की कनौतियां खड़ी हो गईं. यह क्या चक्कर है? कहीं यह आदमी पागल तो नहीं?

तभी उन्होंने दूसरे आदमी को कहते सुना :

"अरे, प्यारेलाल, तू तो खैर फिर भी मजे में है. मेरी पूछ, मेरी. मुझे हर रोज सारे शहर का चक्कर लगाना पड़ता है. तेरी तरह मुझे भी पहियों वाली किसी गाड़ी पर सवार होने का मौका नहीं मिलता. मैं भी पानी में सफर नहीं करता. मेरे साथ भी अक्सर लोग बने रहते हैं. पर जहां मैं जाता हूं वहां किसी से मिलना भी मेरा उद्देश्य नहीं रहता. फिर भी चक्कर तो ३०-४० मील का पड़ ही जाता है.

भोलूभाई ने अपने कान फटफटाए. आज या तो उनका अपना ही दिमाग ठिकाने नहीं है— या ये लोग पागलखाने से सीधे छूट कर आ रहे हैं.

जरा आगे बढ़ते ही दोनों आदमी आंखों से ओझल हो गए और भोलूभाई की पढ़ाई-लिखाई, रात को आंखों की नींद, सब हराम!

(बच्चो, क्या तुम भोलूभाई की तबीयत ठीक कर सकते हो? यदि हां, तो बताओ वे दोनों आदमी पागल थे या नहीं, और अगर नहीं, तो क्यों? अपने उत्तर १५ फरवरी तक पोस्ट कार्ड पर नीचे दिया हुआ टोकन चिपका कर भेजो. बिना टोकन चिपके हुए पोस्ट कार्डों पर विचार नहीं किया जाएगा. जिनके उत्तर सही होंगे उनमें से कार्यालय में आए पहले पच्चीस नाम 'पराग' के मार्च ६९ के अंक में छापे जाएंगे. उत्तर इस पते पर भेजो :

भोलूभाई की भूलभुलैया नं. १४, 'पराग' पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बंबई–१)

(भोलूभाई की भूलभुलैया नं. १२ का सही हल और परिणाम देखो पृष्ठ ३५ पर)

'पराग' किशोर-कथा प्रतियोगिता

१,००० रु. के पुरस्कार

★ प्रथम पुरस्कार ५०० रु. ★ द्वितीय पुरस्कार ३०० रु. ★ तृतीय पुरस्कार २०० रु.

पिछले ११ वर्षों में 'पराग' ने आधुनिक बाल-साहित्य को आधुनिक जीवन के धरातल पर रची गई अनेकानेक मौलिक कथाएं देने का गौरव प्राप्त किया है. पुराने सामंतकालीन मूल्यों से हट कर जो नई चेतना वयस्कों को अपने लेखकों और कवियों से प्राप्त हुई है, उसकी सराहना और अनुशीलन हिंदी के बाल-पाठक बचपन से ही करने का अभ्यास डालें, और इस प्रकार बड़े हो कर विश्व में तेजी से विकसित होने वाली नवीन साहित्यिक विधाओं के जागरूक अध्येता बन सकें— यह काम इतना सरल नहीं है. नवीन मूल्यों के अनुशीलन में हिंदी का कथा-लेखक इस प्रारंभिक शर्त को प्रायः भुला ही बैठा है कि कहानी में मनोरंजन का तत्व सर्वोपरि है.

'पराग' को अपने इस महत् प्रयत्न में सब से अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा. घिसीपिटी लोक-कथाओं, डरावनी परी-कथाओं, और हर वाक्य में घटना का पहलू बदलने वाली कहानियों से जो रस बाल-पाठकों को मिलता है, एकदम वही रस आधुनिक बाल-जीवन की प्रस्तुत करने वाली कथाओं में कैसे लाया जाए, यह एक भारी समस्या थी. खुशी की बात है कि कुछ विशिष्ट कथाकारों ने 'पराग' के माध्यम से इस प्रयत्न में अभूतपूर्व सफलता पाई.

जिन लोक-कथाओं, परी-कथाओं, पौराणिक-कथाओं को आज सामान्यतः बच्चों का साहित्य माना जाता है, वे अधिकतर उस सामंती या पौराणिक जीवन के चित्र उपस्थित करती हैं, जो शायद ही आज के इस अत्यंत गतिशील अणु-युग के लिए बच्चों को भीतर-बाहर से तैयार कर सकें. यदि उनमें नैतिक शिक्षाएं होती हैं, तो उनकी घटनाओं का व्यावहारिक धरातल बहुत पुराना और आज से सर्वथा भिन्न होता है. आज के दैनिक, सामाजिक या राजनीतिक जीवन से उनकी पृष्ठभूमि का प्रायः कोई संबंध नहीं होता. इन कथाओं में जिस स्वप्निल जीवन की झांकियां होती हैं वह बच्चों को बड़े होने पर नहीं मिलता. इसी लिए बड़े होने पर वे जीवन की विषमताओं का सामना करने में असमर्थता व निराशा का अनुभव करते हैं.

हमें मनोवैज्ञानिक व व्यावहारिक पृष्ठभूमि पर ऐसी कथाएं चाहिएं, जो आज के धरातल पर, आज के बाल-पात्रों को लेकर, उनके स्वस्थ व सुखी जीवन के निर्माण के लिए रची गई हों—साथ ही वे इतनी सरल हों कि बच्चों के लिए सुगमता से ग्राह्य हों, इतनी मनोरंजक हों कि वे राक्षसों और जादूगरों की कहानियां भूल जाएं, और वे उनके दैनिक जीवन से सामंजस्य भी स्थापित करती हों.

'पराग किशोर-कथा प्रतियोगिता' के नियम

१—कहानी सामान्यतः ४००० से ६००० शब्दों के बीच होनी चाहिए. २—लिफाफे के ऊपर बायें कोने पर 'पराग किशोर-कथा प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए. ३—कहानी अनिवार्यतः अप्रकाशित, अप्रसारित तथा मौलिक होनी चाहिए. अनूदित, रूपांतरित या अन्य भाषाओं के आधार पर लिखित कहानियों पर विचार नहीं होगा. ४—प्रत्येक कहानी की पांडुलिपि के ऊपर एक कोरा कागज अलग से लगा होना चाहिए, जिस पर लेखक-लेखिका का पूरा पता, कहानी का शीर्षक, भेजने की तिथि आदि दर्ज हों. पांडुलिपि के अंत में भी लेखक-लेखिका का पूरा पता होना चाहिए. ५—अस्वीकृत कहानियों को उसी दशा में वापस किया जाएगा, जबकि प्रेषक का पता लिखा व टिकट लगा लिफाफा संलग्न होगा. ६—पांडुलिपि कागज की एक ओर स्पष्ट, सुपाठ्य व स्वच्छ अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई होनी चाहिए. कृपया टाइप की साफ और मूल प्रति ही भेजने का कष्ट करें. ७—समस्त पांडुलिपियां हमें अधिक से अधिक २० मार्च १९६९ तक मिल जानी चाहिएं. पुरस्कार विजेताओं के नाम 'पराग' के अगस्त १९६९ के अंक में प्रकाशित होंगे. इस प्रतियोगिता के संबंध में किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा, अतः पांडुलिपि के साथ कोई पत्रादि न रखें. ८—पुरस्कृत, व प्रतियोगिता में प्राप्त अन्य स्वीकृत कहानियों का प्रथम प्रकाशनाधिकार 'पराग' का होगा. इसके बाद पूर्ण कापीराइट लेखक का ही रहेगा. ९—पांडुलिपियां इस पते पर भेजी जाएं— संपादक 'पराग' (किशोर कथा-प्रतियोगिता), पो० आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई—१. १०—यदि इस प्रतियोगिता में उपयुक्त तथा वांछित स्तर की कहानियां प्राप्त न हुईं, तो संपादक 'पराग' को एक, दो या तीनों पुरस्कार रोक लेने का अधिकार होगा. □

बहुत बहुत दिन पहले की कहानी कह रहा हूं. पोथी, पुराण अथवा इतिहास में जिन दिनों का कोई वर्णन नहीं है, यह कहानी उन्हीं दिनों की है.

एक राजा को एक बार बहुत कठिन रोग हुआ. उनका रोग किसी भी प्रकार से ठीक नहीं हो रहा था. राज्य के सभी चिकित्सकों ने यथासाध्य प्रयास किया. सभी चिकित्सकों और राजवैद्यों ने अपनी अपनी जानी हुई औषधियों का प्रयोग किया, परंतु इस पर भी राजा प्रतिदिन दुबले होते जा रहे थे. चिकित्सा से न उनका बुखार कम हुआ और न उनके सीने का दर्द दूर हुआ.

राज्य के लोग आपस में कहने लगे कि राज्य के चिकित्सक और राजवैद्य राजा से वेतन लेते हैं. घर-गृहस्थी, खेतीबारी, पालकी आदि का सुख-भोग वे राजा की दया और दक्षिणा से करते हैं. उसी राजा के रोग को यदि वे ठीक न कर सकें, उनके कष्ट को तनिक भी न कम कर सकें, तो वे किस काम के चिकित्सक हैं? इन लोगों ने इतने दिनों से क्या सीखा है? इनके पीछे इतना व्यय करने से लाभ ही क्या है? इस प्रकार राजा, रानी, राजकुमार, दरबारी, मंत्री आदि सभी लोग राजवैद्यों और चिकित्सकों से क्रमशः असंतुष्ट होने लगे.

अंत में एक वैद्य ने अपने प्राण को राजा के कोप से बचाना कठिन जानकर राजा से कहा, "महाराज, यह अत्यंत कठिन व्याधि है. इसकी केवल एक ही औषधि है जो हमारे शास्त्रों में वर्णित है. इस औषधि की कथा स्वयं ब्रह्मा ने अश्विनीकुमारों को कही थी. जो वैद्य अपनी जाति से वैद्य हैं केवल वे ही इस औषधि से परिचित हैं. यह औषधि पूर्णतया अव्यर्थ है, परंतु इसे संग्रह करना कठिन कार्य है. क्या आप इस औषधि का संग्रह कर सकेंगे?"

मंत्री ने पूछा—"वह औषधि क्या है?"

वैद्य ने उत्तर दिया—"हिमालय के ऊपर कैलास पर्वत के नीचे मानसरोवर में जो सफेद हंस विचरण करते हैं उनमें से मुझे कम से कम दस हंस चाहिएं. जीवित अवस्था में उन हंसों के शरीर से चरबी निकालनी होगी. उस चरबी के साथ शेर की चरबी और मक्खन मिलाकर तथा लेप बनाकर तीन दिन तक राजा के शरीर में लगाने से राजा अवश्य स्वस्थ हो जाएंगे."

मंत्री ने पूछा—"क्या साधारण हंस से कार्य नहीं चल सकता?"

व्यंग्य के साथ वैद्य ने कहा—"नहीं, मंत्रीजी, यदि ऐसा होता, तो मैं कभी का औषधि बना लेता. मुझे तो केवल वे ही हंस चाहिएं. क्या आप उनका संग्रह कर सकेंगे?"

कुछ चिंता करने के पश्चात् मंत्री ने कहा, "यदि आवश्यक हुआ, तो हंसों का संग्रह करना ही पड़ेगा. देखा जाए, क्या होता है."

आज कल वायुयान के युग में भी मानसरोवर के निकट जाना कठिन कार्य है, अतः उस समय तो यह कार्य असंभव ही था. इस बात को वैद्य जानता था और उसने जान-बूझकर ही हंसों की मांग की थी. परंतु मंत्री भी हताश होने वाले नहीं थे. वह अत्यंत बुद्धिमान और अनुभवी थे. उन्होंने राजा के वेतनभोगी शिकारियों में से एक ऐसे शिकारी का चयन किया, जो बहुत साहसी था और उसके लिए मंत्री ने हिमालय तक टट्टुओं और घोड़ों की व्यवस्था कर दी. परिणामस्वरूप कुछ दिनों के भीतर ही वह शिकारी मानसरोवर के निकट पहुंच गया.

परंतु दूर से पक्षी को मारना एक बात है और उसे पकड़ना दूसरी बात है. कहा जाता है कि मानसरोवर में देवता प्रतिदिन भ्रमण के लिए आते हैं तथा वहां के हंस स्वयं मां गंगा के अनुचर हैं. अतः यह तो स्वाभाविक बात है कि वे हंस साधारण हंसों से अधिक चतुर होंगे. शिकारी

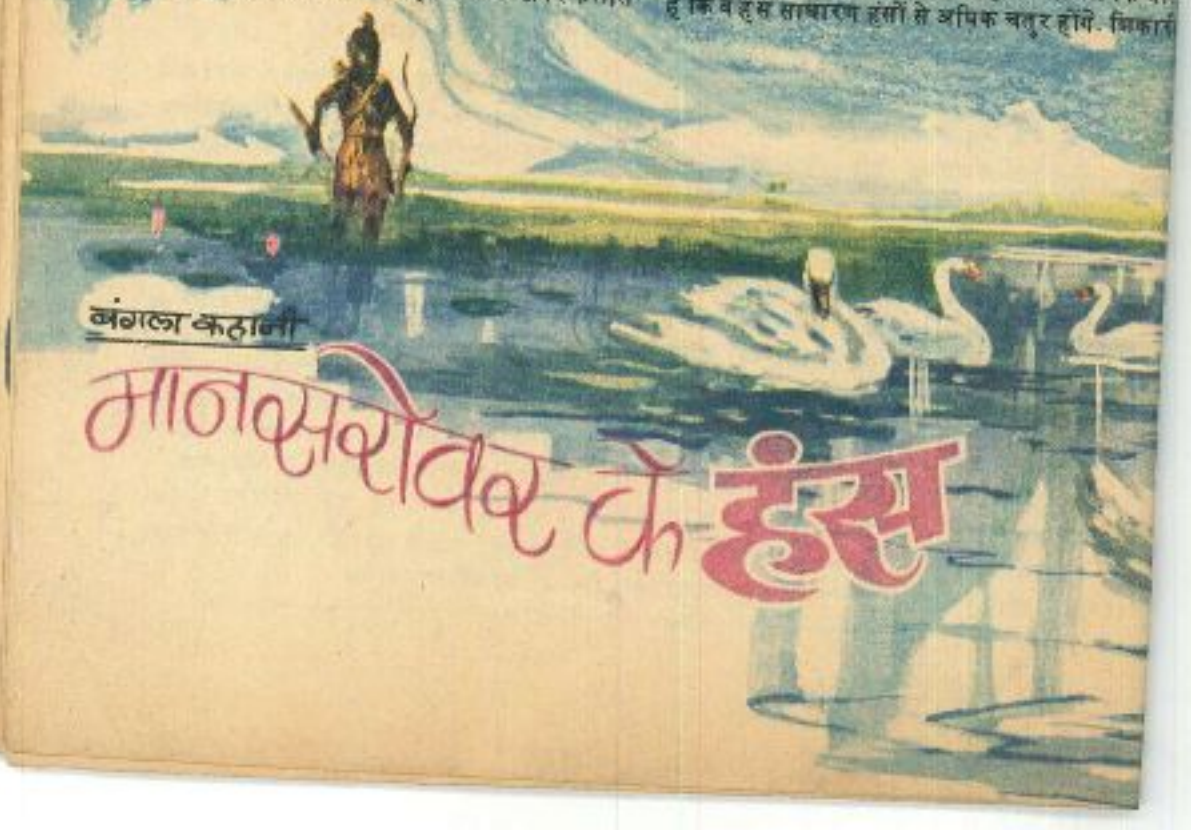

बंगला कहानी

मानसरोवर के हंस

प्रति मास
नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ो और हमें २० फरवरी तक लिखो कि अपनी पसंद के विचार से कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है. इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे. केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन बच्चों की पसंद का क्रम बहुमत के क्रम से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, 'पराग' में उन सब बच्चों के नाम छापे जाएंगे और उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे.

नवंबर अंक में प्रकाशित कहानी 'सरनेम' सर्वश्रेष्ठ चुनी गई. इस कहानी की लेखिका श्रीमती शीला इंद्र को ५० रुपये का अतिरिक्त पुरस्कार भेजा जाएगा. ऐसी ही घोषणा दिसंबर अंक के लिए भी की गई थी. उसका परिणाम अगले अंक में देखिए.

अपनी पसंद एकदम अलग कार्ड पर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदि के कार्डों पर नहीं. अपनी उम्र भी अवश्य लिखो. पता यह लिखो—**संपादक, 'पराग (हमारी पसंद–२४)', पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई–१.**

पिंजड़ों से मुक्त कर दिया. उस समय उसने इसी कार्य को अपना प्रथम एवं प्रधान कार्य सोचा. अब वह चिंता करने लगा कि इसके बाद उसे क्या करना चाहिए.

पहले तो शिकारी ने सोचा कि वह साधु हो जाएगा तथा स्वदेश नहीं लौटेगा. परंतु यह विचार उसे रुचिकर नहीं प्रतीत हुआ और उसने सोचा कि जिस राजा का उसने इतने दिनों तक नमक खाया है, उसी राजा ने उसे अपने विपत्तिकाल में एक विशेष कार्य के लिए भेजा है. इस समय उसका कार्य न करके छिप जाना विश्वासघात जैसा काम होगा. अतः उसने निश्चय किया कि वह लौट जाएगा और अपने देश जाकर राजा द्वारा दिए गए दंड को सहर्ष स्वीकार करेगा.

शिकारी ने ऐसा ही किया. घोड़े तो मौजूद थे ही, अतः वह शीघ्र अपने देश लौट आया. शिकारी को खाली हाथ लौटते देखकर उस दुष्ट वैद्य ने अपने दोनों हाथों से मूंछों को ऐंठते हुए कहा, "क्या हंस नहीं मिले? मैं जानता था कि तुम हंसों को नहीं प्राप्त कर सकोगे. इसी लिए तो मैंने पहले नहीं कहा था, अन्यथा क्या हम जैसे वैद्यों को औषधियों का ज्ञान नहीं है? हम लोग तो साक्षात् धनवंतरि के वंशज हैं."

शिकारी ने इन बातों का उत्तर नहीं दिया और सिर झुकाए खड़ा रहा.

मंत्री ने आकर गंभीरता से पूछा— "क्या हुआ? खाली हाथ क्यों लौट आए?"

शिकारी ने हाथ जोड़कर कहा — "मंत्रीजी, मुझसे अपराध हो गया है. इसके लिए जो दंड देना हो दीजिए. परंतु मेरी एक प्रार्थना यह है कि मुझे एक बार राजा के निकट जाने दीजिए. मुझे उनसे एक बात कहनी है, जिसे कहने के उपरांत आप मुझे मृत्यु-दंड दीजिएगा. फिर मैं आपसे कुछ नहीं कहूंगा."

मंत्री ने पहले तो सोचा कि राजा अत्यंत अस्वस्थ हैं. इस समय शिकारी को उनके निकट ले जाना क्या उचित होगा? किंतु फिर उन्होंने सोचा कि यह शिकारी राजा का बहुत ही प्रिय व्यक्ति है. अतएव उन्हें न सूचित कर शिकारी को किसी भी प्रकार का दंड देना उचित नहीं होगा.

●

अंत में मंत्री शिकारी को राजा के निकट ले गए. राजा अस्वस्थ होने पर भी विवेक-रहित नहीं हुए थे. यंत्रणा और पीड़ा के बाद भी राजा प्रतिदिन मंत्री और अपने पुत्र को उपदेश देते थे कि किस प्रकार से राज्य का शासन किया जाता है. वह अपने प्रिय शिकारी को देखकर बहुत आनंदित हुए.

उन्होंने कहा, "क्या बात है? तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो? तुम हंसों को नहीं पकड़ सके, यही न?"

शिकारी ने कहा—"नहीं, महाराज! मैंने उन्हें पकड़ कर भी छोड़ दिया है."

राजा ने गंभीरता से कहा— "तुमने हंसों को मानसरोवर से पकड़कर भी छोड़ दिया, इसका क्या अर्थ है? यह जानते हुए कि मुझे यह कठिन रोग हुआ है तथा हंसों के ऊपर ही मेरा जीवन-मरण निर्भर है, तुमने उन हंसों को छोड़ दिया!"

तब शिकारी अस्वस्थ राजा की शैया के निकट बैठ गया. उसने दोनों हाथ जोड़कर सारी घटनाएं—एक के बाद एक—राजा को सुना दीं. इसके बाद उसने राजा से कहा, "महाराज! हंस की चरबी से जो कार्य हो सकता है, क्या वही कार्य मनुष्य की चरबी से नहीं हो सकता? आप वैद्य से कहिए कि वह मेरी चरबी को जीवित अवस्था में ही निकाल ले. आपके अन्न-जल पर पला यह शरीर यदि आपके काम आ सके, तो इससे बढ़कर इस शरीर का और क्या उपयोग हो सकता है, महाराज!"

राजा शिकारी की इन बातों को सुनकर बहुत देर तक शांत बैठे रहे. अपने प्रिय और विश्वासपात्र सेवक

के इस भले आचरण से उनके नेत्रों में आंसू आ गए. अपने को संभाल कर राजा ने कहा, "तुमने उचित कार्य ही किया है. तुम्हारे संन्यासी के भेष को देखकर तथा विश्वास कर जिन हंसों ने अपने को तुम्हें समर्पित किया था, उनको पकड़ कर लाना तुम्हारे लिए अनुचित कार्य होता. इसके अतिरिक्त मैं नहीं जानता था कि वैद्य ने जीवित हंसों के शरीर से चरबी निकालने की बात कही थी, अन्यथा मैं इसे कदापि स्वीकार न करता. तुमने जो कुछ किया है, अच्छा ही किया. नहीं तो इससे हम दोनों को पाप होता. मुझे अब औषधियों की आवश्यकता नहीं है. मैं समझ रहा हूं कि भगवान यह नहीं चाहते हैं कि मैं स्वस्थ हो जाऊं. मेरे लिए तो अब मृत्यु ही श्रेयस्कर है. इसके लिए मेरे मन में तनिक भी क्लेश नहीं है. तुम दुखी मत हो और घर जाकर विश्राम करो. मैं तुम्हारे व्यवहार और सच्चाई से बहुत प्रसन्न हुआ हूं."

यही नहीं, राजा ने मंत्री को आदेश दिया कि शिकारी को पुरस्कार दिया जाए. राजा ने स्वयं अपने कंठ से सोने का हार निकाल कर उसे दिया. इसके बाद राजा ने अपने पुत्र को राजकार्य समझाकर और सभी कार्यों से निश्चित होकर, संन्यास धारण कर लिया. अब वह मृत्यु का—चाहे जिस दिन भी आए—स्वागत करने के लिए तैयार थे.

परंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि इसके बाद राजा धीरे धीरे अपने आप स्वस्थ होने लगे और कुछ दिनों के भीतर पूरी तरह से रोगमुक्त हो गए. सके

- **दयावान वह है जो पशुओं के प्रति भी दयावान हो.**
  —बाइबिल
- **दया के शब्द संसार के संगीत हैं.**
  —फेबर
- **दयाशील अंतःकरण प्रत्यक्ष स्वर्ग है.**
  —विवेकानंद

अतिरिक्त जिस वैद्य ने मानसरोवर से पकड़कर लाए हुए जीवित हंसों की चरबी को औषधि के रूप में चाहा था, उसे वही अद्भुत रोग हुआ, जो राजा को हुआ था. उसने अनेक प्रयत्न किए और अनेक औषधियों का सेवन किया, परंतु वह किसी भी प्रकार से अच्छा नहीं हुआ. वह उसी रोग से कुछ दिनों के भीतर ही मर गया. दूसरे वैद्य अपनी अपनी लाज बचाने के लिए कहने लगे कि वास्तव में उसने राजा की रक्षा करने के लिए, राजा का रोग अपने शरीर में लेकर त्याग किया है. राजा को चाहिए कि वह वैद्य के पुत्रों को पुरस्कार दें.

वैसे राजा ने वैद्य के पुत्रों को पुरस्कार दिया था या नहीं, मुझे पता नहीं है. ●

(अनुवादक : मृगांकशेखर घोषाल)

मूल लेखक का पता :
बेनी एवन्यू, कलकत्ता– ३१

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"कैसी मूर्खतापूर्ण प्रार्थना कर रहे हो भगवान से कि '१९६९ को चार से विभाजित कर दो!' मामला क्या है?"

"भई, कल मासिक परीक्षा में पूछा गया था कि सन १९६९ की फरवरी कितने दिनों की होगी और मैं '२९ दिनों की' लिख आया हूं!"

कहानी

ज़बान काट ली

• गुरुप्रसाद अव

पुराने समय की बात है, उज्जैन में एक कवि रहते थे. उनका नाम था उपेंद्र. वह बहुत ही गरीब थे. लोग जब उनकी कविताएं पढ़ते या सुनते तो 'वाह! वाह!!' कर उठते. मगर कवि का पेट वाह-वाह से नहीं भरा करता. इसलिए किसी किसी दिन तो वह और उनकी पत्नी सुलेखा केवल एक समय के जलपान के सहारे ही पूरा दिन गुजार देते.

उन्हीं दिनों एक कवि मगध से वहां आया. उसने मगध के राजा चतुरसेन की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि वह बहुत ही दयालु और दानी हैं. गुणीजनों का बड़ा आदर और मान करते हैं और उन्हें भेंट व पुरस्कार देकर मालामाल कर देते हैं.

कवि उपेंद्र की हालत उस समय बड़ी खराब थी. उनकी पत्नी ने कहा—"तुम भी राजा चतुरसेन के यहां जाओ, शायद हमारे भाग्य खुल जाएं और हमें गरीबी से छुटकारा मिल जाए."

राजा की प्रशंसा और पत्नी का आग्रह सुनकर कवि उपेंद्र अपना भाग्य आजमाने मगध चल पड़े. लेकिन जब वह मगध पहुंचे तो उन्हें अपनी आशा के महल ढहते दिखलाई पड़े. उन्हें किसी ने राजा चतुरसेन के सामने पेश नहीं होने दिया.

एक तो बेचारे अपनी गरीबी से ही दुखी थे, अब उनकी दशा परदेश में आकर और भी खराब हो गई. तंग आकर क्रोध में उन्होंने राजा की निंदा में कुछ कविताएं लिखीं और पास की एक पहाड़ी पर चले गए, जहां भगवान शंकर का मंदिर था. वहीं पर उन्हें कुछ और भी कवि मिल गए. उनसे मिलने पर कवि उपेंद्र ने राजा के प्रति निंदा भरी कविताएं सुनानी शुरू कीं.

संयोग की बात थी कि उस मंदिर में राजा चतुरसेन का मंत्री भी पूजा के लिए आया हुआ था. राजा चतुरसेन के प्रति निंदा से भरी कविताएं सुनकर उसे बड़ा क्रोध आया. उसने नौकरों से कवि की खूब पिटाई करवाई.

कवि उपेंद्र को इस अपमान का बड़ा ही दुःख हुआ. वह इस टोह में रहने लगे कि किस तरह राजा चतुरसेन के पास पहुंच कर मंत्री के अन्याय की शिकायत करें.

एक दिन उन्हें खबर मिली कि राजा चतुरसेन अपने राज्य के दौरे पर जाने वाले हैं. वह शहर से दूर जाकर उस रास्ते के पास छिपकर बैठ गए जिधर से राजा आने वाले थे.

जब राजा चतुरसेन उधर से निकले, तो अचानक कवि उनके सामने जा पहुंचे. उन्होंने मंत्री

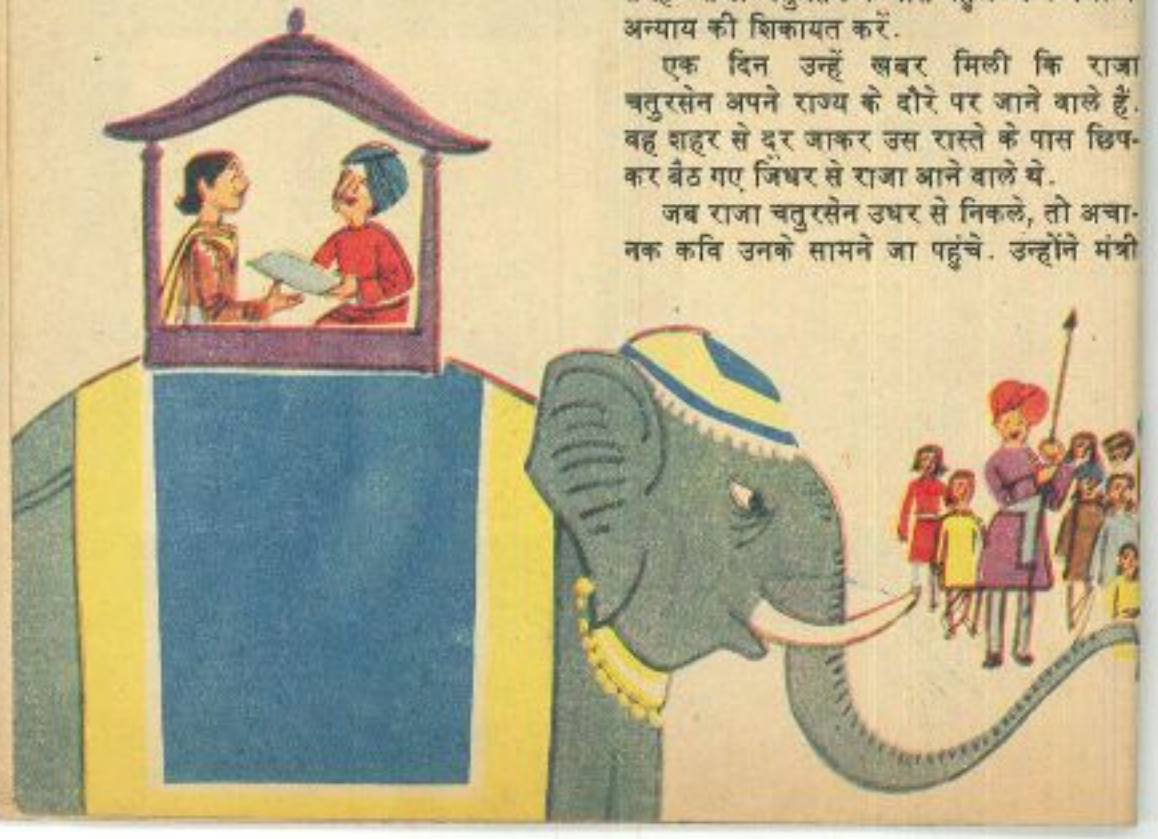

के अन्याय की बात कही. मंत्री उस समय राजा चतुरसेन के साथ ही था.

राजा के पूछने पर मंत्री ने बताया—

"यह कवि अपने साथियों को आपके बारे में निंदा भरी कविताएं सुना रहा था."

राजा चतुरसेन को क्रोध आ गया. उन्होंने गुस्से में मंत्री से कहा—"जब तुमने इसकी जबान से मेरी बुराई सुनी थी, तो उसी समय इसकी जबान क्यों न काट ली?"

मंत्री से कोई उत्तर न बन पड़ा. राजा ने अपने एक सिपाही से कहा—"इस कवि को अपने साथ ले जाओ और कल सवेरे इसे महल में हाजिर करो ताकि इसकी जबान काट ली जाए."

सवेरा होते होते यह खबर शहर भर में फैल गई कि एक कवि ने राजा चतुरसेन की निंदा की है. आज उसको दंड दिया जाएगा. दंड का दृश्य देखने के लिए बहुत से लोग महल के सामने जमा हो गए. कवि का बुरा हाल था. मृत्यु आंखों के सामने नाचती फिर रही थी.

थोड़ी देर बाद दूर से एक हाथी आता दिखाई दिया. लोगों को विश्वास हो गया कि जबान काट-कर कवि को इस हाथी के पांव तले रौंदा जाएगा. हाथी पर एक आदमी बैठा हुआ था. लोगों ने देखा कि कवि को रस्सी में बांध कर हाथी पर चढ़ाया गया. जो मनुष्य हाथी पर पहले से बैठा था, उसने एक गठरी खोली—उस में से उसने बहुमूल्य कपड़े निकालकर कवि को पहनाए. फिर उसने एक लाख रुपये की थैली कवि को थमा दी और कहा—"ये रुपये और ये वस्त्र तथा यह हाथी—सब तुम्हारा है. अब जहां चाहो जा सकते हो." यह कह कर वह व्यक्ति हाथी से उतर गया.

राजा चतुरसेन एक झरोखे से यह दृश्य देख रहे थे. क्योंकि यह सब उन्हीं की आज्ञा से हो रहा था. मंत्री भी पास ही खड़ा था. राजा ने मंत्री से कहा, "देखो, लेखकों और कवियों की जबान इस तरह काटी जाती है. अब यह मेरी निंदा में एक शब्द भी नहीं कहेगा!"

सचमुच उस कवि ने पुरस्कार पाकर राजा चतुरसेन की निंदा की बजाय प्रशंसा में कविताएं लिखीं और जगह जगह सुनाता फिरा.

द्वारा सुश्री लीला देसाई, राहत विला,
४१ बर्ली, सी फेस, बंबई-१८

आए हैं ऋतुराज यहां

"गगन नया है, धरा नई,
मौसम पर है हवा नई,
कलियों के हैं रंग नए,
फूलों के हैं ढंग नए,
रंग-रंगीली यह तितली
आज लग रही बड़ी भली!
और गूंजती अमराई,
नए गीत लेकर आई!
नहीं समझ में आता कुछ,
यह सपना है या है सच!"

चुन्नू की बातें सुन कर,
कोयल यों बोली हंस कर—
"ठहरो, मैं बतलाती हूं,
सब रहस्य समझाती हूं—
चीजें सभी पुरानी हैं,
सब जानी-पहचानी हैं!
पर जो बात निराली है,
समझ न आने वाली है,
रुको, वही बतलाती हूं,
शंका सभी मिटाती हूं."

फिर वह 'मिसरी की गोली'
मीठे स्वर में यों बोली—
"सुनो, लिये महके सपने,
पहने फूलों के गहने;
आए हैं ऋतुराज यहां,
रंग घुला है जहां-तहां,
स्वागत में उनके मौसम,
रंग लुटाता है पुरनम!
इन्हीं रंगों में रंगे हुए,
नए वेश में सजे हुए;
मंद मंद सब हंसते हैं,
नए नए-से लगते हैं!"

—रवींद्र शलभ—

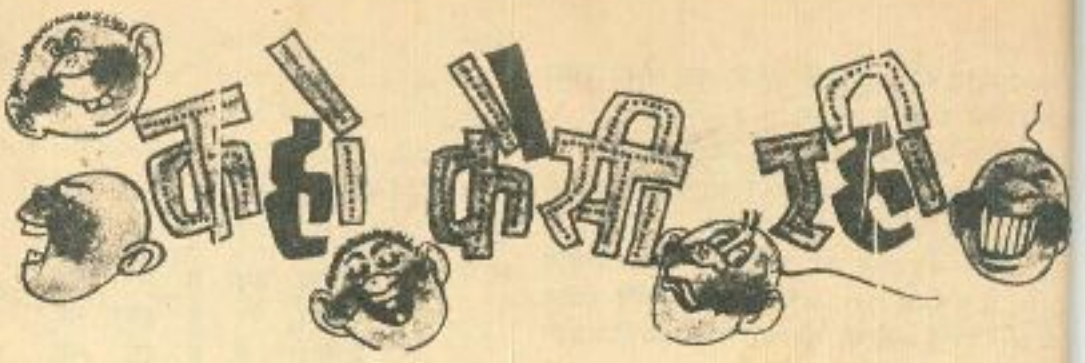

चंदू : "किसी व्यक्ति का दाह-संस्कार सैनिक-सम्मान के साथ हो, इसके लिए उस व्यक्ति को क्या होना चाहिए?"

चमन : "उसे कम से कम सेना का कप्तान होना चाहिए!"

चंदू : "तब तो मैं शर्त हार गया."

चमन : "क्या शर्त लगाई थी तुमने?"

चंदू : "उसका मृतक होना जरूरी है!"

●

वर्माजी अपनी पत्नी और सोलह बच्चों के साथ चौपाटी जाने के लिए सड़क पर आए. चौराहे पर खड़े सिपाही ने अचानक वर्माजी को पकड़ा और थाने ले जाने लगा. वर्माजी ने घबड़ा कर पूछा. "भई, मैंने किया क्या है?"

"तुमने कुछ न कुछ तो किया ही होगा, तभी तो यह भीड़ तुम्हें घेरे खड़ी है!" सिपाही ने उत्तर दिया.

●

गप्पू : "मां, भगवान के राज्य में जाने के लिए क्या करना चाहिए?"

मां : "बेटा, कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए."

गप्पू : "तो, मां, यह राज्य किसका है, जिसमें हम लोग रह रहे हैं?"

●

"वह तो बड़ा चालाक आदमी निकला. उसने मुझे ऐसी जमीन बेची, जो दो फुट पानी में डूबी हुई है, इसलिए मैंने उससे अपना रुपया वापस मांगा."

"तो उसने वापस किया?"

"अजी कहां! उसने मुझे एक नाव और बेच दी!"

●

"यात्री: "आपने पैसे गिनने में जरा भूल की है."

बुकिंग क्लर्क (खीझकर): "पैसे लेते समय ही आपको गिन लेने चाहिएं थे."

यात्री : "गिनकर ही आया हूं. आपको भी ठीक गिनकर ही देने चाहिएं. एक रुपया आपने ज्यादा दे दिया है!"

मैनेजर : "तुम्हें आज आफिस आने में देर कैसे हुई?"

चपरासी : "जो नयी अलार्म घड़ी ली है उसी के कारण!"

●

एक अजनबी एक गांव पहुंचा. गांव के बाहर ही एक आदमी से पूछा : "यहां की आबोहवा कैसी है?"

"निहायत स्वास्थ्यप्रद! जब मैं यहां आया था, तब मैं कमरे में चल-फिर तक नहीं सकता था, चारपाई से भी मुझे कोई उठाता तो उठता..."

"तब तो कमाल की जगह है. तुम यहां कब से हो?"

"मेरा जन्म ही यहां हुआ है!"

●

वकील : "देखो, जो कुछ तुमने अपनी आंखों से देखा हो, वही कहना."

गवाह : "बहुत अच्छा, सरकार."

वकील : "तुम्हारे पिता का नाम क्या है?"

गवाह ने कोई उत्तर नहीं दिया.

"क्यों जी तुम अपने बाप का नाम क्यों नहीं बताते?"

"नाम तो, सरकार, मैंने कानों से सुना है, आंखों से नहीं देखा!"

●

एक ट्रक ड्राइवर अपने गंतव्य पर पहुंचने की जल्दबाजी में सड़क से सीधा रास्ता पकड़ना भूल गया. वह घड़घड़ाता हुआ एक किसान के अहाते में अपनी ट्रक ले गया और रसोईघर तक जा पहुंचा. वहां किसान की पत्नी खाना बना रही थी. उसने ट्रक-ड्राइवर की ओर एक बार लापरवाही से देखा और फिर चूल्हे पर चढ़ी दाल को करछुल से चलाने लगी.

ड्राइवर ने पूछा : "क्या आप मुझे शेखपुर का रास्ता बता सकती हैं?"

गृहिणी ने उत्तर दिया : "हां हां, क्यों नहीं. हमारे भोजनालय की मेज से गुजर कर, पालने से सीधी ओर मुड़ जाना!"

शिक्षक : "तुम तो कहते थे कि तुम्हें वकील को देखने जाना है, और मैंने तुम्हें क्रिकेट का मैच देखते हुए पाया."

विद्यार्थी : "जी हां, वकील पहला खिलाड़ी था!"

●

अंग्रेज (सगर्व) : "ब्रिटिश साम्राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता था."

भारतीय : "जी हां, क्यों कि ईश्वर को भय था कि वह अंधेरे में आप लोगों पर विश्वास कर कहीं धोखा न खा जाएं!"

●

बस का भाड़ा दो आने से छह पैसे कर देने के विरोध में एक सभा हुई. आयोजक नेताओं में से एक ने दलील दी : "विरोध की वजह यह है कि पहले हम पैदल चलकर दो आने बचा लेते थे लेकिन अब डेढ़ आने ही बचा सकेंगे!"

●

एक प्रसिद्ध दैनिक समाचार-पत्र के संपादक के पास उनके एक राजनीतिक मित्र ने एक घटिया किस्म का लेख भेजा. लेखक मित्र ने लेख के साथ एक चिट भी लगा रखी थी, जिसमें लिखा था : "जहां कहीं ठीक समझें विराम चिन्ह आदि का प्रयोग कर लें और पूरे लेख को प्रकाशित कर दें."

संपादक ने चिट के उत्तर में लिखा : "हमने आपकी प्रार्थना स्वीकार कर ली है. आप भविष्य में केवल विराम चिन्ह आदि ही भेज दिया करें, लेख हम स्वयं तयार कर लेंगे!"

●

अध्यापिका ने कक्षा में गणित पढ़ाते हुए मोहिनी से पूछा, "मान लो मैं यहां पर दो अंडे देती हूं और घर पर चार अंडे, तो कुल कितने अंडे हुए?"

मोहिनी ने आश्चर्य से अध्यापिका की ओर देखा, फिर बोली, "मैं आज ही अपनी मम्मी से कहूंगी कि वह आपको अपनी मुर्गियों में शामिल कर लें!"

मैनेजर : "अभी तुम्हें यहां नौकरी शुरू किए ज्यादा दिन नहीं हुए, लेकिन तुम हमेशा लेट आती हो. यह बहुत बुरी आदत है."

नई टाइपिस्ट : "बात यह है कि यहां ड्यूटी के समय घड़ी देखने की मनाही है. अब मुझे घर पर भी घड़ी न देखने की आदत पड़ गई है!"

●

सिनेमा हाल के बाहर टंगे एक बोर्ड पर लिखा था : "इस सिनेमा घर में ६० साल से ऊपर के सभी व्यक्ति मुफ्त सिनेमा देख सकते हैं, बशर्ते उनके माता-पिता साथ हों!"

●

एक अजनबी ने एक व्यक्ति का द्वार खटखटाया. द्वार खुलने पर उसने उत्सुकता का भाव प्रकट करते हुए कहा, "आप शायद मुझे पहचानते नहीं हैं. आज से पांच वर्ष पहले आपने मुझे दस रुपये देकर मेरी सहायता की थी. आज तक मैं आपके एहसान को नहीं भूला हूं."

"अच्छा, मैं तो भूल ही गया था. तो आप वह दस रुपये वापस करने आए हैं?"

"नहीं, मैं इस शहर से गुजर रहा था, तो सोचा आपसे दस रुपये और लेता चलूं!"

●

"आपका पुत्र मेरी नकल उतारता है, आप उसे रोकतीं क्यों नहीं?" पड़ोसिन ने राधा से शिकायत की.

"बहन, कई बार उसे समझा चुकी हूं कि मूर्खों की नकल मत किया करो, मगर यह मानता ही नहीं!"

●

एक फिलासफर का हैट किसी दूकान पर छूट गया. बेचारे नगर की सात दूकानों से निराश होकर जब आठवीं दूकान पर पहुंचे, तो हैट उन्हें मिल गया. फिलासफर साहब ने दुकानदार को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अंत में कहा : "नगर भर में आप ही एकमात्र ईमानदार दूकानदार हैं. इस हैट को मैंने सात दूकानों पर खोजा, परंतु सबने यही कहा कि हैट उनके पास नहीं है!"

●

मैनेजर : "वह टायर कैसे पंचर हुआ?"

ड्राइवर : "वह एक शीशी पर चढ़ गया था!"

मैनेजर : "क्या तुमने शीशी देखी थी?"

ड्राइवर : "जी नहीं, वह उस आदमी की जेब में थी जो मेरी मोटर के नीचे आ गया था!"

—वीणा वल्लभ

गुरुजी की छतरी

आज गुरुजी स्कूल से घर आते समय एक बात भूल जाने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहे थे. परंतु वह जितना ही भूलने की कोशिश करते, उतनी ही याद ताजी हो जाती और उनके सीने में सालने लगती. अपने खाली हाथ को देखकर वह मन ही मन लाल-पीले होने लगते. उन्हें अपनी छतरी की पुरानी कहानी याद आ जाती, जिसको खरीदने में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था. उन्हें उस सुखद घड़ी की याद भी अपने आप आ जाती, जब वह छतरी लेकर ठाट से सड़क पर चलते और लोगों के पूछने पर उसकी अच्छाइयों का बखान करते न अघाते. इस तरह एक ही क्षण में उनकी आंखों के सामने सभी बातें आकर खड़ी हो जातीं. गुरुजी का हृदय टुक टुक होने लगता. पर क्या करते? छतरी न तो चोरी गई थी और न खोई ही थी, बल्कि टूट गई थी. वह उसके टूटने के लिए अपने को नहीं, वरन् ईश्वर को दोषी मानते थे. वह क्रोध से जल-भुनकर ईश्वर को दो गालियां दे लेते, तो मन का उबाल कुछ देर के लिए शांत हो जाता.

संध्या समय गुरुजी को घर आने में कुछ देरी हो गई थी. उनकी पत्नी द्वार पर खड़ी उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही थी. उन्होंने उसके हाथ में झोला थमाया और अंदर कमरे में जाकर वह अपने कोट का बटन खोलने लगे. पत्नी ने उनके हाथ में छतरी न देखकर पूछा, "आज आप छतरी नहीं लाए? क्या स्कूल में ही भूल आए?"

पत्नी की बात सुनते ही उनका क्रोध ज्वालामुखी की तरह भड़क उठा. उन्होंने मुंह बिचकाते हुए कहा, "छतरी तो जहां जानी थी, वहीं चली गई. अब उसके बारे में क्या बात करें? तुम चुपचाप खाना बनाओ."

गुरुजी ने अपने कोट और कमीज खूंटी पर टांग दिए. टोपी मेज पर रखकर आराम से चारपाई पर लेट गए. पत्नी चाय लाई तो बोले, "दुनिया में लोग धोखा देकर तथा चोरी करके मिनिटों में लाखों रुपये कमा लेते हैं. बड़ी बड़ी जमीन-जायदाद हड़प लेते हैं. कार और हवाई जहाज में घूम घूमकर दुनिया का मजा लेते हैं. परंतु क्या मजाल कि उनके काले कारनामों को संसार में कोई जान पाए. सचाई तो यह है कि उनके सामने किसी की कुछ नहीं चलती. सरकार तो क्या, ईश्वर भी उन्हें दंडित नहीं कर पाता."

गुरुजी की अवस्था चालीस साल की थी. वह बंगाली टोला हाई स्कूल में पिछले बीस साल से अध्यापक थे. नियम के बड़े पक्के थे. ठीक समय पर स्कूल पहुंच जाते. एक वही थे, जो कभी भी गैर-हाजिर नहीं हुए. उन्होंने न तो अपने जीवन में किसी के साथ झूठा वादा किया था और न ही धोखा ही दिया. पचास रुपये मासिक पर नौकरी करनी शुरू की थी और इस समय दो सौ पचास रुपये पाते थे. गुरुजी मितव्ययी थे. वह सोच-समझकर ही खर्च करते. न तो एक

अनंत काणेकर

पाई उधार लेते थे और न किसी को देते थे. नाटक, सिनेमा और सरकस तो उन्होंने जिंदगी में कभी देखे ही नहीं. हां, विजयादशमी के अवसर पर रामलीला शहर भर में घूम घूमकर देखते थे. सीधे घर से स्कूल और स्कूल से सीधे घर आते. न कहीं रुकना, न कहीं बैठना. हां, रविवार और अन्य छुट्टियों के दिनों अपने यजमानों के यहां जरूर चक्कर काट आते थे.

पांच वर्ष पहले गुरुजी ने यह छतरी दस रुपये में खरीदी थी. अब तो छतरी पुरानी हो गई थी. कपड़े में छोटे छोटे छेद हो गए थे. तीलियां टेढ़ी-मेढ़ी हो गई थीं. कुछ तो टूट भी गई थीं. बरसात शुरू होने के पहले उन्हें हमेशा छतरी की मरम्मत करवानी पड़ती थी. जब कोई उनसे कहता कि अब तो आपकी छतरी सड़ गई है, इसे फेंक कर नई ले लीजिए—इतना सुनते ही वह गर्म हो जाते और कहते, "अब ऐसी सुंदर छतरी हिंदुस्तान में नहीं मिलेगी. यह विदेशी छतरी है. अच्छे किस्म की देसी छतरी के दाम पच्चीस-तीस रुपये हैं. भला मुझ जैसा गरीब आदमी महंगी छतरी कैसे खरीद सकता है? फिर मेरी छतरी तो अभी भी काम दे रही है."

लेकिन एक दिन गुरुजी जब स्कूल में पढ़ाने के लिए जा रहे थे, रास्ते में जोरों से बरसात होने लगी. पानी के साथ साथ तेज अंधड़ चलने लगा. हवा के तेज झोंकों और पानी की बौछार से वह छतरी को न संभाल सके. छतरी उनके हाथ से छूट गई और हवा के झोंके के साथ इधर-उधर नाचती भागने लगी. बस, फिर क्या था, आगे आगे छतरी, पीछे पीछे गुरुजी!

सड़क पर ट्रक, कार, बस, रिक्शे, तांगे आदि की परवाह किए बिना ही वह उसके पीछे पीछे दौड़ रहे थे. लोग उन्हें चकित होकर आंखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे. नन्हे-मुन्ने बच्चे तो किलकारी मारकर छू-छू कर रहे थे.

थोड़ी देर में हवा कुछ थमी, जिससे छतरी एक जगह रुक गई. गुरुजी उसे पकड़ने जा ही रहे थे कि एक तांगा दौड़ता हुआ आ गया. गुरुजी ने भागने में जरा भी देर की होती, तो तांगा छतरी सहित उन्हें रौंदता हुआ चला जाता. परंतु वह भाग निकले और तांगा छतरी को रौंदता हुआ चला गया. छतरी की लकड़ी की डंडी टूट गई. कमानी कुछ टेढ़ी हो गई. कपड़ा बिलकुल फट गया. गुरुजी छतरी को टकटकी लगाकर बड़ी करुणा से देखने लगे. उन्होंने कांपते हाथ और धड़कते हृदय से किसी प्रकार साहस बटोरकर टूटी-फूटी छतरी को उठा लिया. उसे हाथ से सहलाते हुए स्कूल चल पड़े.

बूंदें अभी गिर रही थीं. वह पानी से सराबोर हो गए थे. उनका मन दुखी और क्लांत था. उन्होंने रिक्शा भी नहीं किया. सोचा, इतना नुकसान हो जाने पर कुछ खर्च करना ठीक नहीं है. स्कूल पहुंचने पर छतरी को एक कोने में रख कर पढ़ाने लग गए.

उस दिन शनिवार था. स्कूल दो बजे बंद हो गया. गुरुजी चाय पीकर फिर छतरी के बारे में सोचने लगे. बहुत सोच-विचार के बाद अंत में उन्होंने निश्चय किया कि पुरानी छतरी की मरम्मत कराना बेकार है. अच्छा यह होगा कि नई छतरी खरीद ली जाए.

वह पुरानी छतरी को पांच-छह दूकानों पर गए. कोई दूकानदार नई छतरी खरीदने

पर उनकी पुरानी छतरी आठ आने से ज्यादा में लेने के लिए तैयार नहीं होता था. गुरुजी ने एक पुरानी छतरी साढ़े चार रुपये में ली. उन्होंने उसे चार रुपये नकद दिए और आठ आने में अपनी पुरानी छतरी दे दी. छतरी लेकर उन्होंने भीष्म-प्रतिज्ञा की कि अब यह छतरी कम से कम दस साल तक अवश्य चलाएंगे.

रविवार को गुरुजी को, एक यजमान के यहां, सत्य-नारायण पूजा के लिए दूर के एक गांव में जाना था. वह तड़के ही उठ कर नहाए-धोए-साफ-सुथरे कपड़े पहने और हाथ में छतरी लेकर चल पड़े. बस तुरंत मिल गई. दोपहर से कुछ पहले ही अपने यजमान के घर पहुंच गए. खा-पीकर आराम किया. संध्या समय पूजा करके दक्षिणा आदि लेकर घर के लिए चल पड़े.

लौटते समय भी बस उन्हें जल्दी ही मिल गई. वह आराम से बैठकर अपने पास बैठे हुए मुसाफिर से किसी धार्मिक विषय पर बात-चीत करने लगे. जब बस एक गांव में रुकी, तो सब यात्री चाय-पानी के लिए उतरे. गुरु जी भी अपने साथी के साथ उतरे. सामने दूकान पर चाय पीकर और एक बीड़ा पान खाकर झट लौट आए.

बस फिर चल पड़ी.

●

अगले जंक्शन के कुछ पहले ही गुरुजी को अपनी छतरी की याद आई. आगे-पीछे, चारों ओर आंखें फाड़ फाड़कर देखने लगे. कहीं भी छतरी नजर नहीं आ रही थी. उनकी बहुत बुरी हालत हो गई. मुंह रुआंसा हो गया. सारा शरीर पसीने से लथपथ हो गया. उन्हें अपनी छतरी के सिवा दूसरा कुछ दीखता ही न था. अन्य सभी यात्रियों ने अपनी छतरियों पर एक दृष्टि डाली. वे सब बार बार अपनी ओर गुरुजी के ताकने का मतलब ताड़ गए थे. उन्होंने अपनी अपनी छतरी संभाल कर रख ली. यही नहीं, वे अपनी जेब भी देखने लगे कि किसी ने काट तो नहीं ली. गुरुजी ने भी अपनी जेबें देखीं. रुपये-पैसे सब सुरक्षित थे. इससे कुछ तसल्ली हुई. उन्हें अपने भुलक्कड़ स्वभाव पर बारबार गुस्सा आ रहा था.

घर आकर उन्होंने सारी बातें अपनी पत्नी को बतलाईं. पत्नी ने उन्हें धीरज बंधाया कि 'अब व्यर्थ में चिंता और अफसोस करने से क्या होगा? भविष्य में बहुत सावधानी बरतना.' सुबह होते ही सारे मोहल्ले में यह बात बिजली की तरह फैल गई कि गुरुजी की छतरी चोरी चली गई. दो दिन में दो छतरियों का नुकसान एक बड़ी घटना थी. मोहल्ले भर में लोगों की बात-चीत का यही विषय बन गया. जिसे देखो वही गुरुजी के घर आकर उन्हें सांत्वना देता और अपने जीवन की ऐसी ही कोई घटना सुना जाता. सब लोगों की रामकहानी सुनते सुनते गुरुजी ऊब गए थे. किंतु चौधरी रामस्वरूपसिंह की बात सुनकर उनके मन में छतरी मिल जाने की आशा पुनः उत्पन्न हो गई.

चौधरी ने बताया, "गुरुजी, जब मेरी छतरी खो गई थी, मेरी आंखों से भी टपटप आंसू गिरने लगे थे. लाख कोशिश करने पर भी आंसू रुकते न थे. मेरे एक मित्र ने आकर मुझे सांत्वना दी और छतरी मिलने का उपाय बतलाया. उस उपाय से मेरी छतरी मिल गई. आपको भी मैं छतरी मिलने का वही उपाय बतलाता हूं. आप उसे आजमा कर देखें, मुझे पूरी उम्मीद है कि छतरी मिल जाएगी."

इतना कहकर चौधरी ने गहरी सांस ली और बोला, "स्टेशन के पास रोडवेज का एक बड़ा आफिस है. उसमें एक छोटा-सा विभाग है. उसका नाम सरकार ने 'गुम सामान का विभाग' रखा है. बस में जो लोग अपना सामान भूल जाते हैं उस सामान को कंडक्टर ले जाकर उसमें जमा कर देते हैं. बरसात के इस मौसम में प्रतिदिन सैकड़ों छतरियां वहां जमा हो जाती हैं. आप वहां जाकर निडरता से क्लर्क से कह दें कि 'कल मैं अपनी छतरी बस में भूल गया था, कृपया उसे आप दे दें.' इस पर क्लर्क आपके छाते की हुलिया पूछेगा. उसका सवाल सुनकर आप बिलकुल न घबराएं. छतरी का रंग और उसकी डंडी का डिजाइन बतला दें. जवाब देने में जरा भी देर न करें, वरना मामला सब बिगड़ जाएगा. आपके इस उत्तर से संतुष्ट होकर वह कमरे में से उसी किस्म की छतरी लाकर पहचानने के लिए देगा. उसे हाथ में लेकर, ऊपर-नीचे देखकर कह दें कि 'हां, यही मेरी छतरी है.' बस, वह अपने रजिस्टर में आपका हस्ताक्षर लेकर छतरी आपको दे देगा. यदि संयोग से आपके दिए हुए विवरण की किस्म की छतरी न मिले, तो बुरा न मानें. मुस्कराते हुए उसे कष्ट के लिए धन्यवाद देकर वापस चले आएं. इस तरह आप अपना भाग्य एक बार आजमाना चाहें, तो जाकर आजमा लें."

यह सुनकर पंडितजी हंसने लगे. चौधरी राम-स्वरूप ने उनकी पीठ थपथपाते हुए कहा, "आपके लिए यह एक सुनहरा मौका है. इसमें आपको एक पाई भी नहीं खर्च करनी पड़ेगी. भाग्य ने आपका साथ दिया तो छतरी जरूर मिल जाएगी."

●

रामस्वरूप की लालच भरी बातें गुरुजी के दिल में समा गईं. वह रात भर विचारों में डूबते-उतराते रहे. उनकी नींद हराम हो गई. अंत में उन्होंने निश्चय किया, 'रामस्वरूप की सलाह में किसी प्रकार का खतरा नहीं है. मेरी साढ़े चार रुपये की छतरी बात की बात में कोई लेकर चंपत हो गया. वह मेरी छतरी का उपयोग सहर्ष करेगा. मेरी छतरी दूसरे व्यक्ति के पास गई और यदि तीसरे व्यक्ति की छतरी मुझे मिल जाए, तो इसमें किसी प्रकार की बुराई नहीं है. भगवान के यहां हिसाब बराबर हो जाएगा. एक बात और भी है. रोडवेज कंपनी के आफिस में न जाने कितनी छतरियां लावारिस पड़ी होंगी. कंपनी

उन्हें नीलाम करके पैसे कमाती है. मैं कल दोपहर में लंच की छुट्टी में जाकर एक छतरी ले आऊंगा.'

इस निश्चय से उनके मन में संतोष हो गया और उन्हें नींद आ गई. रात भर उन्हें छतरी के बारे में तरह तरह के सपने दीखते रहे. एक बार उन्होंने सपने में देखा कि कंपनी के आफिस में जाकर वह अपनी छतरी मांग रहे हैं. क्लर्क छतरी के बारे में सब विवरण विस्तार से पूछ रहा है. वह जवाब ठीक से नहीं दे पाते. क्लर्क समझ जाता है कि यह आदमी सेतमेत में छतरी लेने के लिए आया है. वह सच्चाई जानने के लिए उन्हें थाने में ले चलने की धमकी देता है. दूसरी बार उन्होंने देखा कि क्लर्क उनके उत्तर से संतुष्ट होकर एक सुंदर रेशमी छतरी लाकर दे रहा है. ऐसे ही सपने उन्हें रात भर दिखते रहे. फिर सुबह हो गई.

सुबह भी उनके मन में हर समय छतरी की बात ही आ रही थी. उन्हें खाना-पीना, कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था. स्कूल में भी बस केवल छतरी ही छतरी दीख रही थी. मन में एक प्रकार की खल-बली मची हुई थी. पढ़ाने में मन नहीं लग रहा था. आधे मन से किसी तरह दोपहर तक पढ़ाते रहे. हर क्षण बीतने के साथ साथ उनका निश्चय भी दृढ़ से दृढ़तर होता जाता था. एक बजते ही लंच की छुट्टी हुई. गुरुजी स्कूल से निकलकर दौड़ते हुए रोड-वेज कंपनी के आफिस में गए. वहां पहुंचते ही उनका दिल धड़कने लगा. उन्हें डर लगने लगा कि उनके हृदय की धड़कन दूसरे लोग कहीं सुन न लें. सीढ़ी पर चढ़ते हुए उनके पैर कांपने लगे. होंठ सूख गए. चेहरा गंभीर हो गया. वह वापस लौट आने की सोचने लगे. इतने में ही उनका एक पुराना शिष्य, जो वहां नौकरी कर रहा था, आ गया. उसने उन्हें नमस्कार कर पूछा, "कहिए, गुरुजी, आप यहां कैसे आए?"

उन्होंने उसे आशीर्वाद देकर कुशल-क्षेम पूछा. फिर सारी बातें उसे बतला दीं. वह उन्हें 'गुम सामान' वाले विभाग में ले गया. कुर्सी पर बैठाकर अधिकारी को सारी बातें बतला दीं. उनकी बातें सुनकर अधि-कारी ने पूछा, "आपकी छतरी के कपड़े का रंग कैसा है?"

गुरुजी ने उत्तर दिया, "काला."

अधिकारी ने पूछा, "छतरी एकदम नई थी या पुरानी? कपड़ा रेशमी था या साधारण?"

गुरुजी ने किसी तरह हिम्मत के साथ कहा, "छतरी दो साल पुरानी थी. कपड़ा रेशमी था. उसकी डंडी बेंत की थी."

अधिकारी गुरुजी की बातें सुनकर अंदर गया. इधर गुरुजी का हृदय जोर जोर से धड़कने लगा. वह मन ही मन भगवान से प्रार्थना करने लगे, "मुझसे यह बड़ी गलती हो गई. बताई गई किस्म की छतरी न मिले, तो बहुत अच्छा हो. हे भगवान, इस बार तुम

मदारी की परख—

"ये मुर्गी के अंडे गायब करना तो हरकोई जानता है, जरा मेरी कापी का अंडा गायब करके तो बताओ!"

मेरी इज्जत बचा लो. मुझे दूसरी छतरी की आवश्यकता नहीं है."

परंतु इसे दुर्भाग्य कहा जाए या सौभाग्य, अधिकारी ने गुरुजी की बतलाई हुई किस्म की छतरी लाकर उन्हें पहचानने के लिए दी. उन्होंने खड़े होकर कहा, "हां, हां, यही तो मेरी छतरी है!" और उसे चूम लिया. रजिस्टर में हस्ताक्षर कर छतरी लेकर स्कूल आने के लिए चल पड़े. वह छतरी हाथ में लेकर फूले नहीं समा रहे थे. उनकी छतरी साढ़े चार रुपये की थी और उन्हें जो नई छतरी मिली, उसकी कीमत पच्चीस रुपये थी. आफिस के बाहर आते ही उनके शरीर में नई शक्ति का संचार हुआ. हवा की गति से तेज रफ्तार से दौड़ते हुए वह वापस आ गए. अभी लंच समाप्त होने में आधा घंटा था.

वह स्कूल के प्रत्येक अध्यापक को अलग अलग मिल-कर अपनी छतरी मिलने की बात बड़ी शान से बतलाते. बात समाप्त करते हुए कहते, "हमारे एक बहुत अच्छे और अनुभवी मित्र हैं, उनकी सूझबूझ और चतुराई से यह काम पूरा हुआ है. कृपया, आप लोग यह बात किसी को न बतलाएं!"

गुरुजी के स्कूल में ही कलावती नाम की एक अध्यापिका की नियुक्ति हाल में हुई थी. वह समय पर आती और पढ़ाने में व्यस्त रहती. वह लोगों से बेकार

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

बोल री क

बच्चो, तुमने कठपुतली का खेल अवश्य देखा होगा. ये छोटी छोटी कठपुतलियां कितना अच्छा नाचती हैं. कभी कभी ये ऐसा हास्य-विनोद का नाटक करती हैं कि देखने वाले हंसते हंसते लोटपोट हो जाते हैं. तुम अगर चुपचाप खिसककर स्टेज के पीछे चले जाओगे, तो तुम वहां देखोगे कि दो-तीन आदमी अपनी उंगलियों में डोरियां बांधे पुतलियों को लटकाए हुए नचा रहे हैं और अपने मुंह से सीटी बजा बजाकर कठपुतलियों में बातचीत करा रहे हैं. कितना मनोरंजक होता है यह सब! देखने में कितना भला लगता है!

राजस्थान में कठपुतली के नाच का बड़ा प्रचलन है. कुचामन, परबतसर तथा निंबोद तो इसके केंद्र हैं. दक्षिण में डोरी से नाचने वाली कठपुतलियों के अतिरिक्त ऐसी भी कठपुतलियां बनती हैं जिन्हें हाथ और उंगलियों से पकड़ कर नचाया जाता है. आंध्र प्रदेश में चमड़े की कठपुतलियों को दीपों के प्रकाश के सहारे सफेद चादर के पीछे से दिखाया जाता है. तुम इन कठपुतलियों की छायाएं ही परदे पर देख सकते हो.

कठपुतली का खेल रूस, जर्मनी, आस्ट्रेलिया आदि देशों में भी होता है और नए नए प्रयोगों द्वारा इसे अधिक सजीव और मनोरंजक बनाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं.

(छाया : जे. एस. पारीक)

↑ संपेरे की बीन की धुन पर
ने फन फैला दिया है—
असली की तरह. वैसे नकली
ही है—संपेरा भी और नाग

←
लगता है यह साधू बाबा रोज रो
भिक्षा मांगने आ जाते हैं. पर आज
इन्हें भिक्षा के बदले अच्छा-खासा
उपदेश पिलाया जा रहा है!

…पुतली, बोल

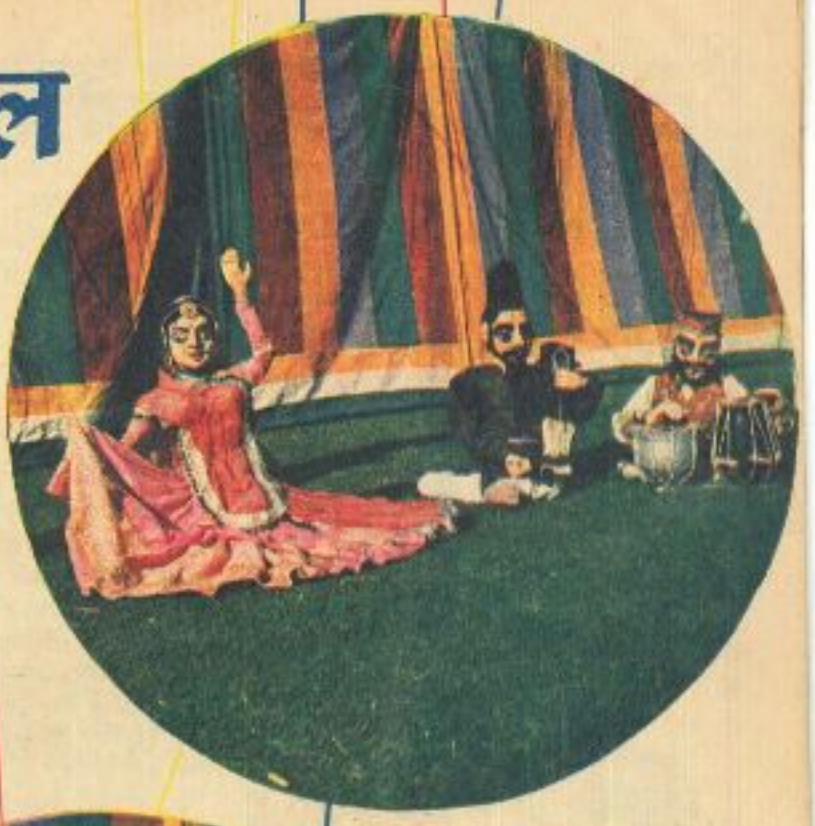

↑ लो, भई, संगीत-महफिल की कमी पूरी हो गई. अब तो नाच बस, देखने ही लायक है!

संगीत की महफिल जुड़ी, नाच भी शुरू हुआ, ढोलक भी बजी, लेकिन सारंगी और तबले बिना सब सूना सूना-सा लगता है!

वक्त बहुत बुरी चीज है,' तुमने अक्सर लोगों को कहते
सुना होगा. 'वक्त की बात है जो ऐसा हो गया,
वरना ऐसा होने की कोई उम्मीद न थी.' साथ ही
लोगों को यह भी कहते सुना गया है, कि 'वक्त की बात
है, मैं बाल बाल बच गया!' इसी प्रकार वक्त की बाबत
अक्सर ही लोगों को बातें करते देखा जाता है.

जब मैं छोटा था, मेरी मम्मी मुझे सवेरे ही चार-
पांच बजे जगा दिया करती थीं. तड़के चार-पांच बजे
कड़कड़ाते जाड़े में रजाई में से निकलना! बाप रे!

अक्सर बेवक्त मम्मी मुझे चाय पीने की आज्ञा देती
हैं. बेवक्त ही स्कूल भेज दिया करती हैं :

"मुन्ने, स्कूल का वक्त हो गया और तुम अभी तक
तयार नहीं हुए! ऐं." मम्मी जोर से डांटतीं. मैं दौड़कर
अपन पढ़ने के कमरे में भाग जाता—स्कूल का बस्ता उठा
कर चल देता. छुट्टी हो तो खाना खाने का वक्त, स्कूल

रोचक लेख

वक्त बेवक्त

हो तो स्कूल जाने का वक्त! कभी भी वक्त से छुट्टी नहीं.
हर काम वक्त के आधार पर ही चलता. एक दिन पापा
घर आए, उनकी झाड़ी की तरह बढ़ी दाढ़ी देखकर मुझे
हंसी आ गई. ठीक इसी वक्त पर पापा की डांट सुनाई
पड़ी, "यह बेवक्त का हंसना तुम्हें किसने सिखाया?
हं!" और मैं उसी वक्त मुंह फेर कर कमरे से बाहर हो
जाता. भला कहीं हंसी भी आने से पहले वक्त
पूछती है!

एक बार वक्त का पालन करने की वजह से मुझे
काफी नुकसान उठाना पड़ा था. मुझ से वक्त का
पालन कराने के लिए मम्मी मुझे रोज सवेरे-तड़के ही
उठा दिया करती थीं. उनका कहना था कि टहलने से
सेहत बनती है. इधर वह जगातीं उधर इसी वक्त पड़ोस
के मंदिर से भजन मुझे सुनाई पड़ता :

'उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां जो सोवत है.
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है.'

अब देखो मेरा दुर्भाग्य—प्रातःकाल भ्रमण के समय
आज तक सड़क पर मुझे एक भी चवन्नी पड़ी नहीं
मिली. परंतु वक्त का पालन मुझे करना ही
पड़ता था.

वक्त का पालन करने में मुझे बड़ी कठिनाइयां उठानी
पड़तीं. सुबह-सवेरे किसी दिलचस्प सपने का आधे में
टूट जाना बहुत बुरा लगता. मान लो, मैं यह सपना देख
रहा हूं कि पापा मुझे हलवाई की दूकान पर ले गए.
उन्होंने आज्ञा दी, "बेटा, दूकान में जो भी मौजूद है, मंगाते
जाओ और खाते जाओ!" मैंने आर्डर दिया, मिठाइयां
आईं और मुंह तक पहुंचें, तभी—"उठो, पांच कब के बज
चुके हैं!" के स्वर ने नींद तोड़ दी और मिठाई का एक
टुकड़ा भी मुंह में नहीं पड़ा!

सदा वक्त का पालन करते हुए ही पलो. वक्त के
पालन से तुम यह न समझ बैठना कि मैं किसी बच्चे के
लालन-पालन की बात कह रहा हूं. प्रत्येक मम्मी अपने
बच्चे को पालते वक्त ही वक्त का पालन करना सिखाती
है. बच्चा खुद भी पलता है और वक्त का भी पालन
करता है. वरना मम्मी पालन करना छोड़ कर बेंत से
उसका सालन बनाने लगती हैं. सालन खाने में अत्य-
धिक स्वादिष्ट होता है, परंतु सालन बनने में बिलकुल
मजा नहीं आता.

वीरकुमार अधीर

बचपन का ही वक्त होता है, जब कुछ सीखा जा
सकता है. वक्त को हाथ से जाने देना मूर्खता है. हाथ से
गिर जाने पर मुन्ने को चोट लगती है और वह रोने लगता
है. तुम चाहो तो मिठाई देकर उसे चुप करा लो. मगर
वक्त हाथ से निकल गया है, तो न मिठाई काम देगी
न ही कुछ और. तुम और मुन्ना दोनों ही सिर जोड़कर
जिंदगी भर को रोने बैठ जाओगे. इसलिए वक्त को कस-
कर पकड़े रहो और हाथ से बिलकुल न छूटने दो. वक्त
पर स्टेशन न पहुंचने पर ट्रेन छूट जाती है. लेकिन जब
वक्त छूट जाता है, तो जिंदगी की सैकड़ों ट्रेनें छूटती चली
जाती हैं. इसी लिए कहा है—वक्त को गंभीरतापूर्वक
लो, मजाक मत समझो.

बैडमिंटन खेलते वक्त खिलाड़ी को हमेशा खयाल
रखना पड़ता है कि 'शटल' किधर गिरेगी. जिस वक्त
शटल गिरती है ठीक उसी वक्त 'मत चूको चौहान' का
नारा लगाते हुए हाथ का रैकेट उठता है. इसी प्रकार आने
वाले वक्त के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए.

वक्त सदा बदलने वाली चीज है. कभी अच्छा वक्त
आता है—उसे सुनहरा मौका कहते हैं. कभी बुरा वक्त
आ खड़ा होता है, ऐसे समय 'तकदीर फूटी थी' कहकर
संतोष कर लिया जाता है. मगर इस प्रकार कहकर संतोष
करना कोई अच्छी बात नहीं है. सुनहरा मौका आता-

जाता रहता है. बुरा वक्त भी इसी प्रकार रंग दिखलाता है (सुनहरा नहीं). बुरा वक्त बहुत बुरी चीज है. इसलिए जब तुम्हारा वक्त अच्छा हो तो उस व्यक्ति की मदद करो, जिसका बुरा वक्त आ गया है. वक्त पर की गई मदद अमूल्य होती है. इस एहसान का बदला सही आदमी मरते दम तक चुकाने की कोशिश करता है. मगर एहसान का जिक्र कभी मत करो. 'नेकी कर कुएं में डाल' वाली कहावत याद रखो. बुरे वक्त पर सबके काम आने की कोशिश करो, क्योंकि बुरा वक्त प्रत्येक व्यक्ति पर आ सकता है.

वक्त के सामने बड़े-बड़ों को झुकना पड़ा. राजा-महाराजाओं तक को भी! बड़ा होने पर मैंने एक दफ्तर में नौकरी की. वक्त पर घर से चला. बारिश तेज थी, छतरी ले ली. हालांकि इस वक्त मुझे जुकाम था इसलिए बारिश में घर से नहीं निकलना चाहिए था. मगर मैं चल पड़ा. थोड़ी ही दूर गया था कि आंधी चलने लगी. तेज बारिश की बूंदें तिरछी होकर कपड़े भिगोने लगीं. छाता भी सिर के पीछे की ओर भागने लगा. तुरंत दौड़कर एक मकान में शरण ली और कुछ देर बाद भीगे कपड़ों में घर लौट आया और महीनों तक बीमारी ने पीछा नहीं छोड़ा. इसी लिए कहा है कि वक्त से कभी टक्कर मत लो. वक्त के सामने सबको झुकना पड़ता है. वक्त से टक्कर नहीं लेता, तो बारिश में नहीं भीगता और बारिश में नहीं भीगता, तो काफी दिनों तक चारपाई नहीं पकड़नी पड़ती!

वक्त का खयाल हमेशा रखना चाहिए. बड़ों ने कहा है कि वक्त पर हर चीज बदलती है. जब मैं छोटा था, मेरी मम्मी रोज सुबह के वक्त मेरी कमीज बदलती थीं. अब मैं खुद अपनी कमीज बदलता हूं. अगर वक्त बदल जाए तो गंगू तेली तेल बेचना छोड़ देगा और राजा भोज बन जाएगा. कौवे हंस की चाल चलने लगते हैं और उनकी हुलिया बदल जाती है.

मजे की बात है कि इन दिनों हमारी सरकार भी काफी कुछ बदली है. वर्षा नहीं हुई, सूखा पड़ गया. इसलिए गेहूं का भाव बारह रुपए मन से बढ़कर बहत्तर रुपए मन तक हो गया. सिक्के बदले तो चौंसठ पैसे की जगह सौ का एक रुपया हो गया. लोग कहते हैं, जमाना बदल गया. मगर मैं कहता हूं कि दल बदल बदल कर लोग बदल गए हैं. जिस प्रकार गिरगिट अपना रंग बदलती है, उसी प्रकार वक्त बदलने पर आदमी भी रंग बदलने लगता है. यहां तक कि और चीजों के साथ साथ वक्त खुद भी बदल जाता है.

इसलिए बड़ों का यह भी कहना है कि वक्त का ध्यान रखो और हमेशा ही वक्त के साथ बदलते ही न चले जाओ. कभी कभी वक्त आने पर खुद भी वक्त को बदलने के लिए तैयार रहो. ●

३, हनुमान चौक, देहरादून.

भोलूभाई की भूलभुलैया नं. १९

सही उत्तर और परिणाम

समीकरण इस प्रकार था : $\frac{\text{क ट ह ल}}{\text{श ल ज म}} = \text{श}$

इसलिए श × शलजम = कटहल

श ४ या उस से बड़े किसी अंक के बराबर नहीं हो सकता, क्योंकि श और 'शलजम' के चारों अंकों को गुणा करने से कटहल के पांच अंक हो जाएंगे, और वह कभी चार अंकों के 'कटहल' के बराबर नहीं हो सकता. अब चूंकि श को पहले ही २ के अंक से बड़ा बताया गया था, इसलिए वह ३ के बराबर ठहरा. अब समीकरण की स्थिति इस प्रकार बनी :

$$\frac{\text{क ट ह ल}}{\text{३ ल ज म}} = ३$$

'शलजम' के ३ के अंक को यदि ३ से गुणा किया जाएगा, तो 'कटहल' के क को ९ ही मानना पड़ेगा, वरना फिर कटहल पांच अंकों का हो जाएगा. श के बाद ल ३ नहीं हो सकता और 'कटहल' का ९ न बिगड़ पाए, इसके लिए ४ भी नहीं हो सकता. इसलिए इसे २ मान कर आगे बढ़ा जाए, तो 'कटहल' का ल भी २ हो जाएगा. अब समीकरण यह बना :

$$\frac{९ \text{ ट ह } २}{३ \text{ } २ \text{ ज म}} = ३$$

अब म का तिगुना करने पर 'कटहल' के ल की जगह २ ही आए, इसके लिए म को ४ मानना होगा. इतने अंक पता लगा लेने पर ज ५ के अलावा और किसी अंक के बराबर नहीं बैठता. सब में कोई न कोई अड़चन आ जाती है. इसलिए सही उत्तर निकला :

$$\frac{९७६२}{३२५४} = ३$$

इसी प्रकार

$$\frac{९५०१}{३१६७} = ३ \quad \text{तथा} \quad \frac{९५६१}{३१८७} = ३$$

भी सही उत्तर हैं.

जिनके तीनों उत्तर सही हैं उनके नाम :

शिरीष जोशी, देहरादून; रंजनकुमार जैन, आगरा; मंजू श्रीवास्तव, हल्द्वानी; अशोक झुनझुनवाला, कलकत्ता; अरविंदकुमार गुप्त, रायपुर; अलका मेहता, नई दिल्ली; शशांक गंधे, खंडवा; अनीता माहेश्वरी, रुड़की; अशोककुमार शर्मा, जयपुर; अनिलकुमार गुप्त, दिल्ली; कृष्णकांत बगड़िया, अकोला; अवनींद्रकुमार सिंह, कानपुर; संजय केजरीवाल, नवगछिया (भागलपुर); निशा गोयल, लखनऊ.

किस्सा एक अनोखी

बादशाही जमाना था.

बात दिल्ली के एक मशहूर बादशाह की है, जो अपनी दौलत, रौबदाब और शान-शौकत में उस समय अपना जवाब नहीं रखता था.

एक दिन शाम को बादशाह के आलीशान महल के सामने गधे की पीठ पर सवार एक दरवेश आया. उसने दरबान से कहा, "मैंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है, मुझे कुछ खाना दिलवाने की मेहरबानी करें." दरबान ने उसे भीतर जाने का इशारा किया.

भीतर आंगन में बादशाह के दो सरदार शतरंज के खेल में तल्लीन थे—जबर मियां और सबर मियां. दोनों सौतेले भाई थे. उन पर शतरंज का नशा हर दम सवार रहता था. जब और जहां मौका मिलता, वे शतरंज लेकर खेलने बैठ जाते. अपनी इसी आदत से लाचार होकर वे दोनों आज भी ड्योढ़ी के पास बैठे खेल रहे थे.

एकाएक दोनों भाइयों ने देखा कि गधे की पीठ पर चढ़ा फकीर जैसी दाढ़ी वाला एक व्यक्ति ड्योढ़ी में होकर अंदर चला आ रहा है.

"क्यों, मामला क्या है? बेधड़क कैसे चले आ रहे हो?" जबर मियां ने पूछा.

"शायद हजरत इसे अपना ही दौलतखाना समझ बैठे हों," सबर मियां ने चुटकी ली.

"मैंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है," वह व्यक्ति बोला.

"बड़ा अच्छा किया. खाना बड़ी परेशानी का काम है. खाना न खाने से शरीर हलका रहता है."

सबर मियां ने उसकी ओर कुछ क्षण देखकर पूछा, "आखिर तुम चाहते क्या हो?"

"बादशाह सलामत से जरूरी काम से मुलाकात करना चाहता हूं."

"अच्छा! तुम्हारे पीछे वह क्या है?"

"तसवीर है."

"देखें, कैसी तसवीर है?"

"सिवाय बादशाह सलामत के और किसी को नहीं दिखा सकता."

बड़े चिढ़े दोनों के दोनों भाई, लेकिन करते भी क्या?

तसवीर का

-देवा दास

"तब यहां बैठकर तुम अल्लाह को याद करो, क्योंकि बादशाह से मुलाकात होने के बाद ही तुम्हें जल्लाद के सुपुर्द कर दिया जाएगा. कल सुबह तक तुम्हारा सिर धड़ से अलग हो जाएगा, इसे भी न भूलना."

"जो हुकुम."

खबर मियां और जबर मियां और कुछ न कहकर शतरंज का सामान हाथ में उठा कर वहां से चल दिए.

चित्रकार ने गधे को एक खंभे में बांध दिया और चुपचाप बैठा इंतजार करने लगा.

एकाएक तुरही बज उठी. नगाड़ा खड़का. नकीब ने 'बा अदब. . .होशियार. . .' की घोषणा की. चारों ओर व्यस्तता छा गई. बादशाह सलामत तशरीफ ला रहे हैं. खोजा-खवासों ने मार्ग पर कालीन बिछा दिया.

थोड़ी देर बाद अमीर-उमरावों से घिरे और इष्ट-मित्रों से बातचीत करते हुए बादशाह आए. वह बाग की ओर जाने के लिए मुड़े ही थे कि एकाएक उनकी नजर उस अजनबी चित्रकार पर पड़ी, जो उन्हें झुककर सलाम कर रहा था.

वह ठिठककर खड़े हो गए.

साथ ही चारों ओर से आवाज आई—'बदतमीज! वहशी. . .बेवकूफ! . . .कोई है? पकड़कर कत्ल कर दो इसे अभी.' पर बादशाह चुपचाप देख रहे थे उस आदमी को.

कुछ क्षण बाद उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो?"

"मैं आपका एक सेवक हूं, खुदावंद."

"वह तो ठीक है, लेकिन तुम अंदर कैसे घुसे?"

उस शख्स ने कहा कि सिवाय बादशाह सलामत के और किसी को नहीं दिखा सकता. जबरदस्ती देखने पर सिर धड़ से अलग हो जायेगा. अब जबर मियां ने कहा, "तब तुम यहीं इंतजार करो. बादशाह यहीं से बाग की सैर के लिए जाएंगे, तभी मुलाकात कर लेना. कोई हथियार तो नहीं छिपा रखा है तुमने अपने पास?"

"जी नहीं, मैं तो चित्रकार हूं. मेरे पास कूंची के अलावा कुछ नहीं है."

खबर मियां ने उसे सावधान करते हुए कहा, "भई, एक बात और याद रखना. हम लोगों से मुलाकात होने की बात बादशाह से न कहना. कहना कि जब ड्योढ़ी का पहरा बदल रहा था तभी धपले में अंदर चले आए थे और यहां पर बादशाह के इंतजार में बैठे हो. क्यों, याद रहेगी न यह बात?"

"जी हां, याद रहेगी," चित्रकार बोला.

"ड्योढ़ी का जब पहरा बदल रहा था, उसी धपले म."

"क्या चाहते हो?"

"कुछ अर्ज करना चाहता हूं आपसे."

"करो."

"मैं चित्रकार हूं. तसवीर बनाता हूं."

"अच्छा!"

"मैंने दो तसवीरें बनाई है. उन्हें आपको भेंट करने के लिए लाया हूं."

"दिखलाओ."

इस अपरिचित व्यक्ति के साथ बादशाह का व्यवहार देखकर उनके साथी हैरत में आ गए. बाग की सैर के लिए निश्चित समय को बादशाह सलामत इस तरह बेकार कर रहे हैं! जरूर आज बादशाह की तबीयत खराब है.

चित्रकार ने पहली तसवीर बादशाह के सामने पेश की—एक बादशाह का महल. प्राणदंड दिए गए चार व्यक्तियों को सूली पर चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा है. दूर महल के झरोखे में खड़े बादशाह आसमान में इंद्रधनुष देख रहे हैं. दंडित व्यक्तियों के चेहरों के भाव से मृत्यु का आतंक स्पष्ट हो रहा है. चित्र के नीचे लिखा था—"दोजख" अर्थात् नरक.

बड़े ध्यान से बादशाह ने तसवीर को देखा. फिर पूछा, "झरोखे में यह कहां के बादशाह हैं?"

"कोई भी हो सकते हैं."

"हूं! मानता हूं कि चित्रकारी के फन में माहिर हो तुम! इन लोगों का कसूर क्या है?"

"जिंदा रहने की ख्वाहिश जाहिर करना!"

"ठीक है. दूसरी तसवीर?"

चित्रकार ने दूसरी तसवीर पेश की. उसे देखते ही बादशाह 'सुभानअल्लाह' कहकर दो पग पीछे हट गए. फिर बड़े आश्चर्य से चित्र की ओर देखने लगे.

चित्र में चंद्रमा की ज्योत्स्ना से आलोकित मरुस्थल दिखलाया गया था. बिलकुल उसके बीच में था मक्का शरीफ. चित्र के नीचे लिखा था—'स्वर्ग'.

●

बादशाह फिर बाग में नहीं गए. वह महल की ओर लौट चले और चित्रकार से बोले, "आओ मेरे साथ!"

चित्रकार ने कहा, "खुदावंद, आने से पहले मेरी एक विनती है!"

"कहो."

"मेरे साथ एक गधा है, हुजूर. उसके कुछ इंतजाम का हुकुम हो जाए, तो अच्छा हो."

बादशाह हंसे, "तुम गधे की सवारी करते हो?"

चित्रकार ने उत्तर दिया, "बिना गधे की सवारी के अक्लमंदी का काम कैसे चलेगा, जनाब?"

बादशाह गंभीरता से बोले, "ठीक कहते हो. बेशक, गधा ही अक्लमंदों की सवारी है." फिर उन्होंने हुकुम दिया कि गधे को शाही अस्तबल में रख कर उसके आराम का पूरा इंतजाम किया जाए.

रात को चित्रकार के साथ बादशाह भोजन करने बैठे.

उस समय बादशाह ने कहा, "मैं चाहता हूं कि तुम मेरी एक तसवीर बनाओ. तसवीर मेरे बैठने वाले कमरे की दीवार पर बनेगी. उस चित्र में मेरे वजीर, आला सिपहसालार, खजांची, एक सरदार, एक बावर्ची और एक बांदी रहेंगे. इन सबके बीच मैं तख्त पर बैठा रहूंगा. लेकिन यह खयाल रहे कि इन सबमें देखने वाले की नजर सबसे पहले मुझी पर पड़े."

"बहुत अच्छा, खुदावंद!"

"भोजन के बाद मैं तुम्हें उस कमरे में ले जाऊंगा. फिर जिनकी तसवीर बनेगी उनसे परिचय भी करा दूंगा. पर तुम उन्हें एक बार से ज्यादा नहीं देख सकोगे!"

"अच्छा हुजूर!"

भोजन समाप्त होने पर बादशाह उसे अपने बैठने वाले कमरे में ले गए. उसने देखा कि कमरे की एक तरफ की सफेद दीवार बिलकुल खाली थी.

फिर बादशाह ने उन सब व्यक्तियों को एक एक करके चित्रकार से मिलने का हुकुम दिया, जिन्हें चित्र में शामिल किया जाने वाला था.

पहले वजीर आए. नन्हा-सा एक कूबड़ था उनकी पीठ पर. उन्होंने बादशाह को सलाम किया, फिर धीमी आवाज में चित्रकार से बोले, "चित्र में मेरा चेहरा सुंदर बनना चाहिए. मेरी पीठ के कूबड़ का नामोनिशान न रहे, नहीं तो तुम्हें कत्ल करवा दूंगा."

फिर आए आला सिपहसालार. उनका नीचे का ओंठ कटा था बीच से. दाहिनी ओर चेहरे पर एक गहरे जख्म का गहरा दाग था.

धीमी आवाज में उन्होंने कहा, "खबरदार, तसवीर में मेरे चेहरे का कोई नुक्स न रहे! कोई नुक्स रह गया, तो मेरे हाथ की तलवार तुम्हारी गर्दन पर होगी!"

इसके बाद खजांची साहब आए. उमर के बोझ से कमर झुक गई थी. चेहरा झुर्रियों से भरा था. चुपके से बोले, "तसवीर में मुझे जवान बना देना, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं, समझे!"

इसके बाद सरदार आए. वह वही थे पूर्व परिचित—जबर मियां. उन्होंने कहा, "मेरे चेहरे को गौर से देखो." चित्रकार ने देखा कि जबर मियां काने हैं. जबर मियां ने हिदायत की, "तसवीर में मुझे काना मत बना देना, नहीं तो जिस ड्योढ़ी से तुम अंदर आए हो उससे बाहर नहीं निकल पाओगे."

फिर आए बादशाह के खास बावर्ची. चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ थी, लेकिन सिर बिलकुल गंजा था. बावर्ची ने कहा, "तसवीर में मेरे सिर पर बाल जरूर बना देना, नहीं तो तुम्हारे गोश्त का कोरमा पका कर बादशाह को खिला दूंगा!"

अंत में आई बांदी. कम उमर की, बेहद खूबसूरत. लेकिन जैसे ही वह मुसकराई चित्रकार ने देखा कि उसके, ऊपर की पांत में, तीन दांत नहीं हैं. वह फुसफुसाई, "तसवीर में मेरा हंसता हुआ चेहरा हरगिज न दिखलाना. खबरदार, नहीं तो जबर मियां से मेरी शादी होने वाली है, वह तुम्हारे तीन टुकड़े कर देंगे!"

"ऐसा ही करूंगा!" चित्रकार ने उत्तर दिया.

●

सबके जाने के बाद बादशाह ने चित्रकार को बुला कर कहा, "सुनो, तुमने जिसे जैसा देखा है, तसवीर में उसे हूबहू वैसा ही होना चाहिए. इसके अलावा सबका चेहरा हंसता हुआ होना चाहिए. अगर किसी के चेहरे में

कोई फर्क आ गया, तो मैं तुम्हें जिंदा दफन करवा दूंगा!"

"जो हुकुम!"

"तुम्हारा मेहनताना क्या होगा?"

"एक हजार मोहरें."

"ठीक है. लेकिन तसवीर के बारे में जो बातें मैंने कही हैं उन्हें याद रखना!"

चित्रकार ने कहा, "हुजूर, मुझे दो मददगार मिलने चाहिएं, जो रंग तैयार करेंगे. और एक बड़े परदे से पूरी दीवार को ढंकवा दीजिए. मेरी एक और प्रार्थना यह है कि कोई भी बिना मेरी इजाजत के न परदा हटाए, न झांककर तसवीर देखने की कोशिश करे. आप भी नहीं, खुदावंद!"

"ऐसा ही होगा." बादशाह ने हुकुम दे दिया.

पंद्रह दिन बाद बादशाह ने पूछा, "क्यों, कैसा चल रहा है तुम्हारा काम?"

"जी, बनाना अभी शुरू नहीं किया है. अभी तो तसवीर की रूपरेखा बना रहा हूं दिमाग में."

जब चार महीने बीत गए, तो बादशाह ने गुस्से में भरकर चित्रकार से कहा, "मैं कल तुम्हारी तसवीर देखूंगा!"

"ठीक है, मालिक! मैं तैयार हूं. पर मेरा अनुरोध है कि चित्र को सब एक साथ देखें."

●

अगले दिन बादशाह सबको साथ लेकर तसवीर देखने के लिए अपने बैठने वाले कमरे में पहुंचे.

चित्रकार इंतजार कर रहा था. बादशाह के आने पर झुककर सलाम करके बोला, "तसवीर दिखाने से पहले मैं कुछ कहना चाहता हूं, जहांपनाह!"

"कहो!"

"मेरी इस तसवीर में एक विशेषता है. यहां जो लोग ऊंचे खानदान के हैं और जिनकी पैदाइश में कोई गड़बड़ी नहीं है, वे ही इस तसवीर को साफ साफ और अच्छी तरह देख सकेंगे. लेकिन जिसकी पैदाइश में कुछ भी गड़बड़ी है या जो निम्न कोटि के खानदान में पैदा हुआ है, उसे तसवीर के बदले सिर्फ सफेद दीवार ही नजर आएगी. क्योंकि मेरी यह अनोखी तसवीर जादुई रंगों से बनी है."

यह कहकर चित्रकार ने दीवार के सामने से परदा हटा दिया.

बादशाह ने कुछ क्षण सफेद दीवार की ओर देखकर सिपहसालार से पूछा, "तसवीर कैसी लग रही है?"

"बहुत सुंदर! बहुत दिन बाद मुझे इतनी अच्छी तसवीर देखने का मौका मिला."

"वजीर! तुम बोलो."

"मैं तो समझ ही नहीं पा रहा हूं कि किन शब्दों में इस तसवीर की तारीफ करूं."

"खजांची?"

"लाजवाब! मैं तो अपने आपको ही नहीं पहचान पा रहा!"

आगामी अंक

'होली विशेषांक'

दस सरस कहानियां :

- कुनैन की गोलियां : गुरदीपसिंह
- तू डार डार मैं पात पात : रेवा दास
- सफाई एक काल कोठरी की : गीता पुष्प शॉ
- लड़ाई ही लड़ाई : प्रदीपकुमार मालवीय
- कमाल फटकी सुरती : निखिलचंद्र जोशी
- हम्बग याने ऊटपटांग : बीरकुमार अधीर
- मिठाई-सिठाई : शीला इंद्र
- मुश्किल आसान हो गई : के. नारायणन्
- स्वर्णचंपा : कथा सेन
- जीतवाला सिक्का : हसनजमाल शीपा

धारावाही 'स्पाई-थ्रिलर' :

डबल सीक्रेट एजेंट ००१/२ (३री किस्त) : चंदर

अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लीजिए

पृष्ठ : ८०

"हूं! अबर, तुम्हारा क्या खयाल है?"

"निहायत अच्छी तसवीर है, जहांपनाह! मामूली आदमी ऐसी तसवीर नहीं बना सकता!"

"इसमाइल!" बादशाह सलामत ने बावर्ची से पूछा.

"बहुत बढ़िया, खुदावंद!"

"नसीमबानू, तुम?" बांदी का यही नाम था.

"मालिक, मैं क्या कहूं!"

"हूं!" कहकर चुप हो गए बादशाह.

अब चित्रकार बोला, "शहंशाह, आपकी क्या राय है इस चित्र के बारे में?"

"ऐं! मेरी राय? बहुत अच्छी तसवीर है! जैसी मैं चाहता था वैसी ही बनी है. खजांची, इसे एक हजार मोहरें दे दो."

मोहरें लेकर चित्रकार जब अपने गधे सहित महल की ड्योढ़ी में से बाहर निकल गया, बादशाह तब भी चुपचाप उस दीवार की ओर टकटकी लगाए खड़े थे.

वास्तव में चित्रकार ने दीवार पर जिन रंगों का प्रयोग किया था, वे रसायन शास्त्र की अद्भुत देन थे. चित्रकार के जाने के बाद बादशाह ने एक दिन अचानक देखा कि दीवार पर राजसभा की पूरी तसवीर उभर आई है. फरक सिर्फ यह था कि उस राजसभा में राजा से ले कर दरबान तक गधे थे. कोई गधा कूबड़ा था, कोई काना, कोई गंजा, तो एक गधी के तीन दांत हीगायब! राजा ने अपना सिर पीट लिया. ●

डी. ४५।२९, नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी –१

कहानी

पप्पूजी बड़े हुए

सुबह हुई. पप्पू उठकर आंखें मलता हुआ बिस्तर पर बैठ गया. कमरे में उसने नजर घुमाई, फिर पुकारा—"मम्मी, मम्मी." दो क्षण चुप रहकर उसने फिर इधर-उधर देखा और रोना शुरू कर दिया—"मम्मी... मम्मी...ऊं ऊं...मम्मी कहां हो तुम? म...म्मी, म...म्मी...ऊं...ऊं...ऊं, ओं...ओं...ओ." वह इधर-उधर देखता हुआ रोता जा रहा था.

दूसरे कमरे से पापा ने जल्दी जल्दी हाथ पोंछते हुए कमरे में प्रवेश किया. "पप्पू, पप्प, चुप हो जा, बेटा! मम्मी अभी आती है. नंदा, उठो तो. देखो, पप्पू रो रहा है." पापा ने पप्पू को गोदी में उठा लिया. पास ही सोई नंदा की चादर उन्होंने खींची और बोले, "नंदा, उठो. देखो, पप्पू रो रहा है."

पप्पू रोता ही जा रहा था. पापा ने उसके माथे पर बिखरे बालों को पीछे हटाया और आंसू पोंछते हुए बोले, "चलो तो, बेटा, तुम्हारा मुंह धुला दें. मेरा पप्पू तो राजा बेटा है. कहीं राजा बेटे भी रोते हैं!" कहकर उन्होंने पप्पू के गाल की मिट्ठी ले ली.

नंदा ने चादर से मुंह निकाला. उनींदी आंखों से पप्पू और पापा की ओर देखा. अंगड़ाई ली, करवट बदली और पैर सिकोड़कर फिर आंखें बंद कर लीं.

पापा ने नंदा की यह हरकत देखी तो झल्लाकर उसकी

चादर एकदम खींच दी. बोले—"नंदा, सात बज रहे हैं. उठो! पप्पू रो रहा है. उठकर हाथ मुंह धो लो, पप्पू का भी धुला दो. तब तक मैं स्टोव जलाकर दूध गरम करता हूं. उठो, उठो, जल्दी उठो." पापा का स्वर तेज हो गया था. नंदा हड़बड़ाकर उठी और पलंग पर बैठ गई.

पापा पप्पू को लेकर बाथ-रूम की ओर चले. "लो बेटा, दांत साफ करो." बाथ-रूम में पहुंच कर पापा ने पप्पू को गोद से उतारकर खड़ा कर दिया. पप्पू सुबकता हुआ बोला—"पापा, मम्मी कहां गई?"

"मम्मी अभी आ जाएंगी, बेटा. तुम मंजन तो कर लो. लो, यह पेस्ट लो. चीं-चीं तो करो, बेटा!" पापा ने पुचकारते हुए पेस्ट का ट्यूब पप्पू के हाथ में थमा दिया. ट्यूब लेकर पप्पू चुप तो हो गया पर उसकी आंखें इधर-उधर घूम रही थीं. आज मम्मी कहां चली गई? रोज सवेरे जब वह उठता था, मम्मी उसके पास होती थीं. उसे दुलार से, 'राजा बेटा, उठो' कहकर जगाती थीं. वह उठ बैठता तो मम्मी उसे उठाकर उसकी मिठठी ले लेतीं. वह लाड़ में आकर मम्मी के गले में अपनी बांहें डाल देता था. वह ही उसका हाथ-मुंह धुलाती थीं. पर आज मम्मी का पता नहीं. वह रो रहा है, फिर भी मम्मी नहीं दिख रहीं. आखिर मम्मी गई कहां? उसकी आंखें बार बार बाथ-रूम के बाहर की ओर घूम जाती थीं. बीच बीच में वह सिसक उठता.

"बेटा, ट्यूब खोलो न! दांतों को साफ करो," पापा उसे समझा रहे थे.

"मम्मी गई कहां है, पापा?" पप्पू ने फिर पूछा.

"मम्मी आ जाएंगी, बेटे! तुम तब तक मंजन तो कर लो" पापा बड़े लाड़ से बोल रहे थे. पप्पू ने ट्यूब खोल कर दबाया, सफेद पेस्ट बाहर आ गया. उसे उंगली में लेकर सुबकते हुए वह दांत घिसने लगा.

"नंदा!" तेज आवाज में पापा चिल्लाए. उनकी कठोर आवाज से पप्पू सहम गया. "जल्दी आओ, पप्पू, नंदा आकर अभी तुम्हारा मुंह धुलाती है," कहते हुए पापा बाथ-रूम से चले गए. पप्पू पेस्ट से दांत घिस रहा था. उसे ब्रश से दांत घिसना अच्छा नहीं लगता. ब्रश के बाल उसके मसूड़ों में चुभ जाते थे, इसलिए वह पेस्ट को उंगली पर लेकर ही दांत पर घिसता था. पिपरमेंट की गोलियों-सा पेस्ट का स्वाद उसे अच्छा लगता था.

"पप्पू, दांत साफ कर लिया, न?" बाथ-रूम में आते हुए नंदा ने पूछा.

"मम्मी कहां गई, नंदा?" पप्पू ने रुआंसे स्वर में पूछा. उसे मम्मी की याद सता रही थी.

"मम्मी अस्पताल में हैं, पप्पू. डाक्टरनी के पास. वहां से वह भैया लाएंगी. तुम जल्दी मंजन कर लो, पप्पू, फिर हम अस्पताल चलेंगे." नंदा ने उल्लास में भर कर कहा.

"नहीं, नहीं, हम अस्पताल अभी चलेंगे. हमें मम्मी छोड़ गई. ऊं. . .ऊं. . .ऊं. . ." पप्पू ने ठिनकना शुरू कर दिया और गुस्से से पेस्ट का ट्यूब फेंक दिया.

"हां हां, चलेंगे न अस्पताल. पर तुम पहले मंजन तो कर लो. कपड़े पहन लो. फिर चलेंगे मम्मी के पास." ट्यूब उठाकर रखते हुए नंदा ने समझाया. वह पप्पू को कुल्ला कराने की कोशिश करने लगी. पप्पू

—हरिकृष्ण तैलंग

ने सिर हिला हिलाकर कुल्ला किया. पानी ऐसा थूका कि नंदा की फ्राक गीली हो गई. पर नंदा को गुस्सा नहीं आया. वह समझदार लड़की है और पांचवीं कक्षा में पढ़ती है. पापा-मम्मी के बाद वही घर में बड़ी है. उसे अभी अभी पापा ने बताया था कि वह मम्मी को रात में अस्पताल छोड़ आए हैं. नंदा जानती थी कि मम्मी किसी दिन अस्पताल जाएंगी. वहां से वह एक नन्हा-सा भैया लाएंगी. फिर उसके दो भाई हो जाएंगे. एक की जगह दो भाई हो जाने की कल्पना करके उसे बड़ी खुशी होती थी. इसकी चर्चा वह अपनी सहेलियों से कई बार कर चुकी थी.

हाथ मुंह धोकर नंदा और पप्पू रसोई घर में आए. पापा केतली में चाय छान रहे थे. नंदा ने उनका चेहरा देखा तो उसे हंसी आ गई. हंसते हुए वह बोली, "पापा, आपके चेहरे पर काला काला क्या है?"

"क्या लगा है?" अचकचा कर पापा बोले और केतली नीचे रख गालों पर हाथ फेरने लगे. "कालिख लग गई है, पापा, चेहरे पर! कैसी मूंछें-सी बन गई हैं." कहते हुए नंदा हंसी से दुहरी हो गई.

पप्पू पापा की ओर आंखें फाड़कर देख रहा था. फिर "पापा, मूंछें, पापा, मूंछें," कहता हुआ हंसने लगा. उसकी आंखों की उदासी कम हो गई और चेहरा खिल उठा.

पापा भी हंस पड़े. "लग गई होगी कालिख! अभी चाय के लिए केतली साफ की थी." कहते हुए उन्होंने तौलिये से अपना चेहरा रगड़ा.

"हां, अब साफ हो गई," नंदा ने बताया और प्याला सरकाकर अपने सामने रख लिया, दूसरा पप्पू के सामने रख दिया. पापा ने दोनों प्यालों को दूध से भर दिया फिर अपने प्याले में चाय भरते हुए बोले, "पियो, बेटा, पियो."

पप्पू ने पापा की ओर देखा. फिर अपने प्याले की ओर देखकर बोला, "नहीं, नहीं पीते दूध! हमें भी चाय दो!" पैर फटकारते हुए वह मचल पड़ा.

"लो, चाय लो, पर रोओ मत." कहते हुए पापा ने थोड़ी-सी चाय पप्पू के प्याले में उंडेल दी.

"पापा, हऊआ खाएंगे. हऊआ." पप्पू फिर रोने लगा.

"क्या मुसीबत है. अभी नहीं है हऊआ. पहले दूध पी लो, फिर हऊआ!" पापा ने झुंझलाकर कहा.

"नहीं, नहीं! हऊ....आ," पप्पू रो पड़ा.

"अच्छा, अच्छा. बना देते हैं हऊआ!" पापा झल्लाकर बोले और उठकर कड़ाही ढूंढने लगे.

●

इतने में ही किवाड़ भड़के.

पापा ने दरवाजा खोला. नौकरानी श्यामा की मां थी.

"क्या हुआ?" पापा एकदम पूछ बैठे. "बच्ची हुई!" श्यामा की मां ने धीमे से उत्तर दिया. वह अस्पताल से आ रही थी.

"क्या मिला, बब्बू मिला क्या?" नंदा ने बड़ी उत्सुकता से श्यामू की मां से पूछा.

"नहीं, बेटी, मुन्नी मिली है. पप्पू की छोटी-सी बहन." नौकरानी ने रसोई में प्रवेश करते हुए कहा.

नंदा कुछ उदास-सी हुई. उसे भाई मिलने की आशा थी. मम्मी ने उसे बताया था कि इस बार भी वह अस्पताल से भइया लाएंगी.

"पप्पू की मां कैसी है?" पापा ने ठंडी आवाज में पूछा.

"अच्छी है," श्यामा की मां बोली. फिर उसने नंदा से कहा—"नंदा, तुम तैयार हो जाओ. पप्पू को भी तैयार कर लो. थोड़ी देर बाद हम अस्पताल चलेंगे."

"मम्मी के पास?" पप्पू ने पूछा.

"हां, बेटा."

थोड़ी देर बाद नंदा और पप्पू बाल संवारकर, अच्छे कपड़े पहनकर तैयार हो गए. श्यामा की मां ने दूध की बोतल तथा अन्य चीजें थैले में रखीं और नंदा व पप्पू से चलने के लिए कहा. पप्पू जूते पहनकर पापा के पास पहुंचा. पापा अखबार पढ़ने में तल्लीन थे. कुछ क्षण चुपचाप खड़े रहकर उसने पापा को हिला दिया और बोला—"हम अस्पताल जाएं, पापा? मम्मी को बुला लाएं?" पापा चौंक से पड़े.

"हां, बेटा, हो आओ अस्पताल. पर मम्मी को अभी मत लाना. चार-पांच दिन बाद आएंगी मम्मी." पापा ने पप्पू के गाल थपथपाते हुए प्यार से कहा.

"नहीं, पापा, हम मम्मी को ले आएंगे. हमें अच्छा नहीं लगता है." पप्पू ने भारी गले से कहा.

"अच्छा, अच्छा! अभी जाओ. नंदा, लो यह रुपया तुम लोग कुछ ले आना." पापा ने दो रुपये का नोट नंदा को देते हुए कहा.

तांगे पर बैठकर वे लोग अस्पताल पहुंचे. रास्ते भर पप्पू और नंदा बातें करते रहे. अस्पताल आया, तो वे लोग तांगे से उतरे. पप्पू की उंगली नंदा ने पकड़ ली. बहुत से लोग आ-जा रहे थे. कइयों के हाथ में दवा की शीशी और डाक्टर के पर्चे थे. कभी कभी नर्सें बगल से खटपट खटपट करतीं तेजी से निकल जातीं. सफेद, स्वच्छ कपड़ों में तनकर चलने वाली स्मार्ट नर्सें पप्पू को अच्छी लगीं.

तीन चार बरांडे और कई कमरे पार कर श्यामा की मां ने एक कमरे में प्रवेश किया. नंदा और पप्पू भी कमरे में घुसे. लोहे के पलंग पर मम्मी लेटी हुई थीं. नंदा तो जल्दी से मम्मी के पास जाकर खड़ी हो गई. पर पप्पू कुछ दूर से ही मम्मी को टुकुर टुकुर ताकने लगा. उसकी आंखों में आश्चर्य तैर आया था और चेहरा गंभीर हो उठा था.

सफेद, रूखे से चेहरे वाली मम्मी उसे अजीब लग रही थीं. ऐसा तो उसने मम्मी को कभी देखा नहीं था.

"आ गई, नंदा," मम्मी बोलीं और उन्होंने मुस्करा-कर पप्पू को बुलाया—"आओ, पप्पू, देखो यह छोटी-सी मुन्नी. तुम इसे खिलाओगे न!" मम्मी अपनी बगल में पड़ी बच्ची की ओर इशारा कर कह रही थीं.

पप्पू सहमा-सा मम्मी के पलंग के पास आकर खड़ा हो गया. नंदा ने उसे उठाकर पलंग पर बिठा दिया. पप्पू ने देखा, सफेद कपड़ों में लिपटा एक छोटा-सा लाल चेहरा आंखें बंद किए पड़ा हुआ है. एक छोटी गुड़िया-सी दिख रही थी वह. पप्पू उसे घूरकर देखने लगा.

इतने में ही डाक्टरनी राउंड लेने आ गईं. वह मम्मी के पलंग के पास आकर पूछने लगी—"कहिए, कैसी तबि-यत है अब?"

"ठीक हूं. थोड़ा कमर में दर्द हो रहा है," मम्मी ने उत्तर दिया.

"अच्छा, दवा भिजवाए देती हूं. यह आपका बाबा है?" पप्पू की ओर इशारा कर डाक्टरनी ने पूछा.

"हां, यह मेरा पप्पू है," मम्मी ने उत्तर दिया.

"बड़ा प्यारा है," कहते हुए डाक्टरनी ने पप्पू के बालों पर हाथ फेरा. उसने सहमकर अपना सिर पीछे कर लिया.

"क्यों पप्पू, अपनी मुन्नी को खिलाओगे न? यह तुम्हारी छोटी-सी नन्ही बहन है. अब तो तुम भाई साहब बन गए हो." डाक्टरनी ने पप्पू से कहा.

पप्पू ने समझदार लड़कों की तरह अपना सिर हिला दिया. डाक्टरनी मुस्कराती हुई दूसरी ओर चल दी.

अब पप्पू का मुंह खुला. बोला, "मम्मी, यह मुन्नी उन्होंने दी है?" और उसने जाती हुई डाक्टरनी की ओर इशारा किया.

"हां, बेटा, उन्होंने यह मुन्नी दी है. अच्छी है न? तुम भाई साहब बन गए हो. बड़े हो गए तुम अब." मम्मी ने प्यार भरे शब्दों में कहा.

पप्पू खुश हो गया. अब वह भाई साहब बन गया है. मुन्नी कहेगी उसे 'भाई साहब,' पप्पू ने सोचा. उसके चेहरे पर गर्व झलक आया. आंखों में प्यार भर आया और ललकभरी आंखों से उसने मुन्नी की ओर देखा.

थोड़ी देर बाद श्यामा की मां के साथ नंदा और पप्पू चलने लगे, तो मम्मी ने दोनों बच्चों को समझाया– "नंदा, तुम पापा और पप्पू का काम कर दिया करो. घर की फिक्र रखना. और, पप्पू, तुम, बेटा, तंग मत करना नंदा को. अब तुम बड़े हो गए हो. अपना काम कर लिया करो और रोना मत, बेटा." मम्मी ने बड़े दुलार से पप्पू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा.

पप्पू ने गंभीरता से अपना सिर हिला दिया. "मम्मी, तुम घर कब आओगी?" पप्पू ने पूछा. उसका गला भर आया था.

"जल्दी ही आऊंगी, बेटा. तीन-चार दिन में ही. अब तुम लोग जाओ." मम्मी ने कहा

श्यामा की मां, नंदा और पप्पू पैदल ही घर की ओर चल पड़े. घर कोई दूर नहीं था और कोई जल्दी भी नहीं थी. इसलिए उन लोगों ने तांगा नहीं किया.

"कित्ती सी है मुन्नी!" पप्पू ने कहा.

"हां, बिलकुल गुड़िया-सी." नंदा ने उत्तर दिया, "पर अभी आंखें नहीं खोलती." नंदा और पप्पू आपस में मुन्नी की बातें करते चल रहे थे.

रास्ते के किनारे एक खिलौनेवाला दिखाई दिया. कई तरह के खूबसूरत खिलौने सजे-सजाए रखे हुए थे. नंदा और पप्पू खड़े होकर उन्हें देखने लगे. तरह तरह के जानवर, पक्षी, गुड्डे और गुड़िया रखे हुए थे. पप्पू को एक गुड़िया पसंद आई. उसने नंदा से कहा— "नंदा, यह गुड़िया ले लो. हम-तुम और मुन्नी खेलेंगे."

गुड़िया बड़ी सुंदर थी. हरे रंग की धोती, गुलाबी रंग का ब्लाउज और सुनहरे रंग के गहने पहने गुड़िया बड़ी प्यारी लग रही थी. नंदा ने वह गुड़िया खरीद ली और पप्पू को दे दी. पप्पू कुछ क्षण तक आंखें मटकाता प्रसन्न मुद्रा में उसे तकता रहा. नंदा ने जब उसका हाथ खींचते हुए चलने को कहा, तो उसका ध्यान टूटा.

गुड़िया बगल में दबाए पप्पू घर आए. पापा ने दरवाजा खोलते हुए पूछा—"आ गए! देख आए मुन्नी को, पप्पू? कहो कैसी लगी?"

"मुन्नी अच्छी है, पापा. वह हमें 'भाई साहब' कहेगी. अब हम बड़े हो गए...हैं न, नंदा?" पप्पू ने नंदा की ओर देखकर कहा और आगे बढ़ कर गुड़िया मेज पर रख दी. फिर अपने जूते के बंध खोलने लगा.

"अच्छा, तुम्हें भाई साहब कहेगी मुन्नी! अरे वाह! अब तो तुम भाई साहब बन गए. अरे, यह क्या लाए? देखें तो," कहते हुए पापा गुड़िया उठाकर देखने लगे.

"अरे अरे! रखी रहने दीजिए गुड़िया. गिर पड़ी, तो उसे अस्पताल भेजना पड़ेगा न!" पप्पू ने तेज स्वर में बड़े रोब से कहा.

"ओहो! अब तुम बड़े हो गए हो न!" गुड़िया ज्यों की त्यों मेज पर रखते हुए पापा बोले.

चार साल के पप्पू की ओर वह आंखें फाड़कर देख रहे थे. ●

लोहा बाजार, विदिशा (म.प्र.)

हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. २१ का परिणाम

'हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. २१' के अंतर्गत 'पराग' के नवंबर अंक में प्रकाशित कहानियों के बारे में हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंद के विचार से कौन कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. इस बार पांच बच्चों के हल सही आए.

बच्चों के नाम और पते इस प्रकार हैं.

● **संतोषकुमारी, द्वारा—सुरेश बाहरी, विशंभरदास बिल्डिंग, सुभाषनगर, बरेली (उ. प्र.).**

● **रंजना गुप्ता, एच–४९, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–२७.**

● **रंजनकुमार अग्रवाल, द्वारा—श्री हरनारायणलाल, बंगलागढ़, नारायण निवास, दरभंगा (बिहार).**

● **सुनीलकुमार गुलाटी, मकान नं. ६४३, वार्ड नं. ४, किला मुहल्ला, रोहतक (पंजाब).**

● **अंजुला गुलाटी, सी–२।३०, गुलाटी निवास, माडल टाउन, दिल्ली–९.**

सही हल वाली कहानियों का क्रम इस प्रकार है :

१–सरनेम, २–ज्योतिष का चमत्कार, ३–एक पंक्चर दिल का, ४–बुद्धिमान लड़की, ५–गूंज और नरगिस का फूल, ६–कौन मरे, ७–टोनी और चिड़िया का बच्चा.

कहानी

खोजी मेमना

एक था मेमना. नन्हा-सा, प्यारा-सा.

उसका मालिक एक बूढ़ा लकड़हारा था. लकड़ी काटने के लिए वह रोज जंगल में जाया करता था. अपने साथ वह मेमने और उसकी मां भूरी को भी ले जाया करता था.

मेमने को जंगल में खब मजा आता. खूब मस्ती से घूमना, खाना, पीना!

मेमने राम खोजी प्रकृति के थे. चुस्त-दुरुस्त भी थे, वीर-निडर भी. उन्होंने जंगल में अपने कई मित्र बना लिए. सबसे निकट का उनका मित्र था कठफोड़ा. मेमने राम उससे घंटों बतियाते रहते. उसके साथ खेलते-कूदते-फांदते. लकड़हारा और भूरी दोनों शरारती मेमने पर नजर रखते थे.

ऐसे ही एक दिन लकड़हारा जंगल में अपने काम में व्यस्त था और भूरी बैठी जुगाली कर रही थी. मेमने राम ने देखा कि दोनों का ध्यान उनकी तरफ नहीं है. बस, वह चुपके से दोनों की नजर बचा कर वहां से भाग खड़े हुए. दरअसल मेमने राम के मन में एक जिज्ञासा थी, काफी दिनों से. जब भी वह नजर दौड़ाकर कहीं दूर देखते थे, तो वहां उन्हें आकाश धरती से मिलता हुआ दीखता था. बस वह उसी सुंदर जगह पर जाना चाहते थे ताकि आकाश को छू कर देख सकें.

जब मेमने राम लकड़हारे और भूरी से थोड़ी दूर निकल आए, तो आराम से टहलते हुए आगे बढ़ने लगे. उन्हें पता भी नहीं चला कि कब उनका दोस्त कठफोड़ा चुपके से उनके पीछे लग गया था.

मेमने राम को यूं स्वतंत्रता से मस्ती में घूमना बहुत भाया. मन में उमंग आई, तो वह कुलांचे भरने लगे और इस तरह अपनी मां और लकड़हारे से काफी दूर निकल आए.

अब घना जंगल शुरू हो गया था. आकाश और धरती का संगम अब भी पहले की सी ही दूरी पर दीखा. आगे रास्ता न पाकर वह ठिठककर खड़े हो गए.

तभी न जाने कहां से ताक में बैठा हुआ एक खूंखार भेड़िया अचानक सामने आ गया. मेमने राम सम्हल भी न पाए और देखते देखते दो-तीन भेड़ियों ने उन्हें घेर लिया. मेमने की तो घिग्घी बंध गई, सोचा, 'बुरे फंसे'. शरीर था कि मारे डर के पत्ते की तरह थरथर कांप रहा था. उधर भेड़िए जीभ लपलपाते हुए अपने शिकार की घबराहट का मजा लेते हुए, उसकी ओर बढ़ने लगे. मेमने ने मन ही मन प्रार्थना की, 'हे भगवान, अब तू ही मालिक है!'

मगर तभी एक ओर से 'खट-खट' की आवाज आने लगी. जैसे कोई लकड़हारा लकड़ी काट रहा हो.

भेड़ियों के बढ़ते हुए कदम इस आवाज को सुनकर सहसा ठिठक गए. उन्हें लगा कि हो न हो यह लकड़हारा ही इस मेमने का मालिक है.

खट-खट की आवाज तीव्र हो गई. भेड़ियों ने अब तो वहां से नौ दो ग्यारह होने में ही खैरियत समझी. उन्होंने सोचा कि अगर लकड़हारा उन तक पहुंच गया तो उनकी शामत आ जाएगी. बस वे दुम दबा कर भाग खड़े हुए.

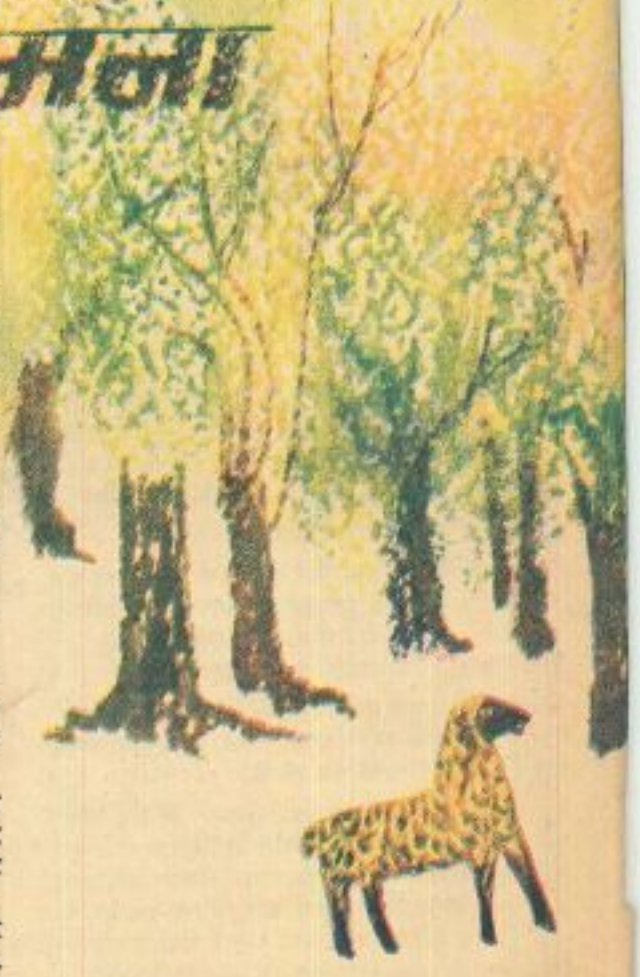

अब तक मेमने राम की टांगों ने थकावट के मारे चलने से जवाब दे दिया था. थोड़ी देर बाद ठीक से होश में आने पर उन्होंने सोचा, 'यह लकड़हारा यहां कहां से आया?'

तभी किसी ने उनकी पीठ में टहोका मारा. मेमने

राम एक दम चौंककर ठिठक गए. साथ ही उन्हें अपने मित्र कठफोड़े की चिर परिचित हंसी सुनाई दी.

"कहो, कैसा हाल है?" कठफोड़ा पूछ रहा था.

मेमने राम 'ही ही' करके अपनी झेंप मिटाने लगे, "तो यह खट-खट की आवाज करने वाले तुम ही थे. पर तुम्हें यह पता कैसे चला कि मैं यहां हूं?"

कठफोड़े ने बताया कि उसने मेमने को अपने अभिभावकों की नजर बचाकर भागते हुए ताड़ लिया था.

"मगर तुम्हें यहां आने की क्यों सूझी?" कठफोड़े ने पूछा.

मेमने ने वजह बताई. इस पर कठफोड़ा पांच मिनिट तक खूब हंसा.

"अरे भैया," वह बोला, "आकाश और धरती भी कभी मिलते हैं? यह तो दृष्टि का भ्रम है! दूसरे आकाश नाम की चीज भला है क्या?"

कठफोड़े ने देखा कि इस प्रश्न पर उसका मित्र बगलें झांकने लगा, इसलिए उसने बताया :

"दरअसल धरती के ऊपर कई मील तक वायु-मंडल है. धरती के पास का वायु-मंडल काफी सघन है, जो क्रमशः ऊपर की ओर विरल होता चला गया है. वायु-मंडल के समाप्त होने पर शुरू होता है—अंतरिक्ष!"

"अच्छा!" मेमने की मुख-मुद्रा में विस्मय था.

"हां, घनेपन की वजह से ही वायु-मंडल नीला नीला-सा दिखता है, जिस तरह झील या समुद्र का पानी."

अब वे दोनों मित्र वापस लौट रहे थे.

"तो समुद्र अथवा झील का पानी नीला होता है?" मेमने ने अगला प्रश्न किया.

"नहीं. बहुत बड़ी जल-राशि ही नीलिमा लिए हुए दिखती है. जल का अपना कोई रंग नहीं होता. उसी तरह, जिस तरह वायु का अपना कोई रंग नहीं होता."

"अच्छा अब समझा!" मेमने राम ने ठंडी सांस ली. "दृष्टि-भ्रम का पता न होने से मैं तो आज मरते मरते बचा!"

"गधे कहीं के! अरे, अपनी माताजी से या मुझसे पूछ लिया होता! किसी भी तरह की जानकारी प्राप्त करने में संकोच नहीं करना चाहिए, विशेषकर मित्रों से. समझे?" और कठफोड़ा प्रेम से अपने मित्र के कान हौले-हौले सहलाने लगा. ●

२१५५, राइट टाउन, स्टेडियम के पास, जबलपुर.

• शाहिद अब्बास अब्बासी

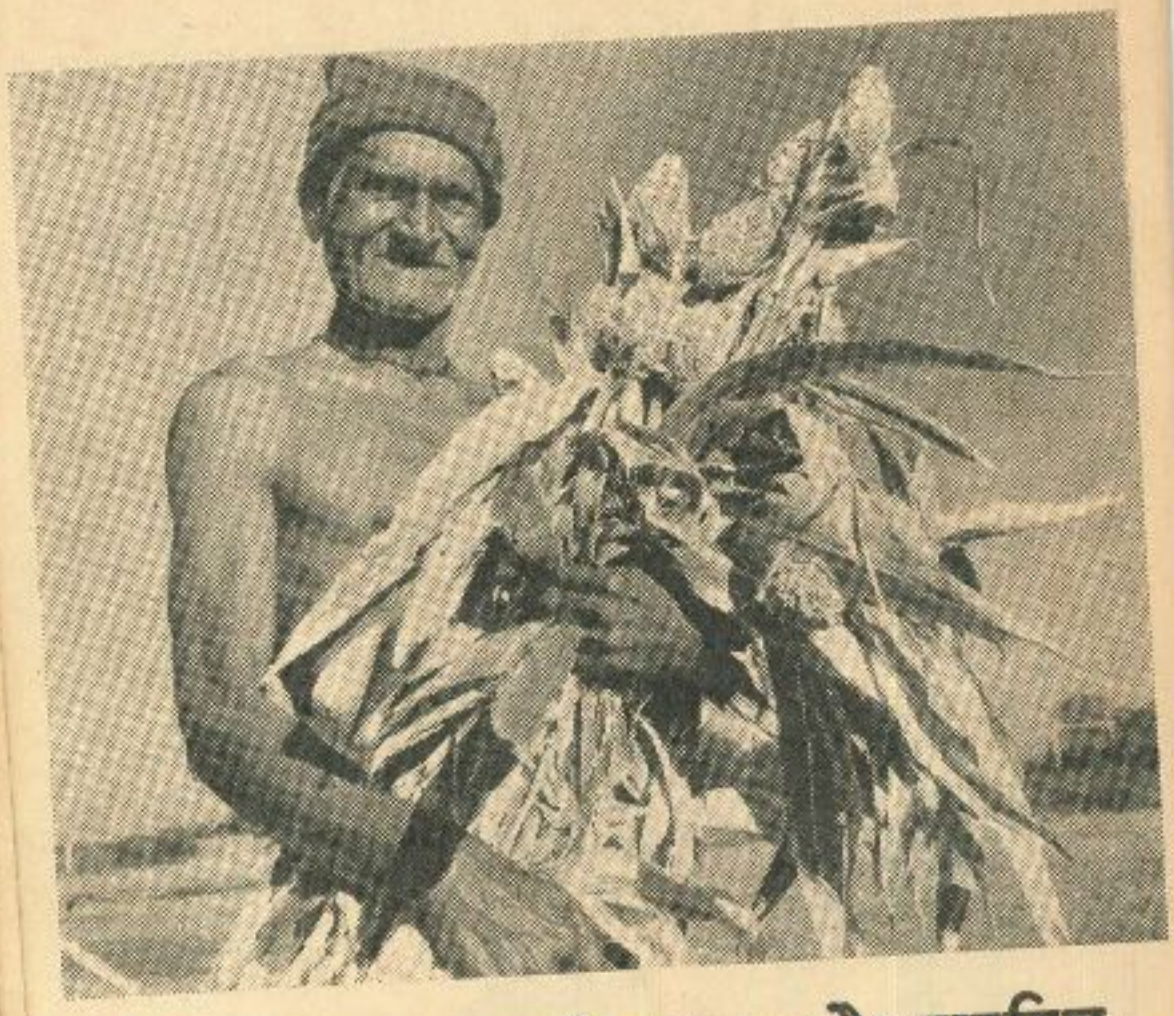

स्टेट बैंक उसे खाद, कीटनाशक और हाइब्रिड बीज खरीदने के लिए ऋण देगा जिससे वह बेहतर फसल पैदा कर सके

स्टेट बैंक किसानों को वाजबी सूद पर फसल के विरुद्ध ऋण देता है जो खेत के आकार तथा फसल की किस्म पर निर्भर करता है।
स्टेट बैंक की अपनी नजदीक की शाखा में पधारें और देखें कि वह खेती के आधुनिक तरीकों के जरिये अधिक फसल और अधिक मुनाफा हासिल करने में आपकी किस प्रकार मदद करता है।

अगले वर्ष बेहतर फसल की अभी से गारंटी प्राप्त कीजिये।

बेहतरीन सेवा के लिए स्टेट बैंक

S.379 HN

डेपुटेशन (पृष्ठ १५ से आगे)

दे सकते हैं."

"दादाजी, आप ही बता दीजिए न, कि हम क्या पहनें?" बच्चों ने पूछा.

दादाजी ठंडे हुए. सोचकर बोले, "सुनो, एक पुरानी कहावत है कि जब तुम रोम में जाओ, तो वही कपड़े पहनो, जो रोमन पहनते हैं. क्या समझे, बबली?"

"कुछ नहीं समझा, दादाजी. हम स्कूल में ड्रेस की बजाय अध्यापकों जैसे कपड़े पहनकर जाएंगे तो मुर्गे बना दिए जाएंगे."

"स्कूल पर यह बात लागू नहीं होती, क्योंकि स्कूल में दिखावा नहीं करना होता. समझे? मंत्रीजी के घर हमें वही कपड़े पहनकर जाना चाहिए, जो मंत्री लोग पहनते हैं."

"यानी कि, दादाजी, हम सब खादी के कुर्ते और चूड़ीदार पाजामे पहनें?" राजू ने पूछा.

"बिल्कुल!" दादाजी प्रसन्न हुए.

"पर, दादाजी, हमारे पास ऐसे कपड़े नहीं हैं."

"तो बाजार से खरीदो."

"पर, दादाजी, मम्मी-डैडी मानेंगे नहीं."

"अब यह तुम जानो, तुम्हारा काम जाने. जहां चाह, वहां राह. थोड़ा जोर देने पर काम बन सकता है. दो बातें मैं साफ कर देना चाहता हूं. पहली तो यह कि इस डेपुटेशन में केवल वही बच्चे शामिल होंगे, जो किसी भी तरह खादी के कपड़ों का इंतजाम कर लेंगे. दूसरी यह कि आगे भी हमें जाने कितने ही डेपुटेशन ले जाने होंगे. उन सब डेपुटेशनों पर भी यही शर्त लागू होती है. यानी एक बार सिलाए हुए खादी के कपड़े बार बार. . ."

"दादाजी, लड़कियां?" पिंकी ने बीच में ही पूछा.

"लड़कियां भी खादी की सादा फ्राक पहनेंगी."

"दादाजी, पॉपलीन से काम नहीं चलेगा?" मधु ने रुआंसी होकर पूछा.

"कतई नहीं!" दादाजी कुतुब मीनार की तरह अटल रहे.

बच्चों ने अपने अपने घर जाकर कपड़ों के लिए जिद करनी शुरू कर दी.

●

दादाजी सोचते थे कि यह काम राष्ट्रीय महत्व का है, इसमें कोर-कसर नहीं रहनी चाहिए. कल को टाफियों पर से टैक्स हट गया तो देश के कोने-कोने में मेरी धाक जम जाएगी. किताबों तक में कहानी आ सकती है कि किस तरह बच्चों के एक दादा बिना अपनी जान की परवाह किए मंत्रीजी से जा भिड़े और उनसे टैक्स माफ कराके छोड़ा. मंत्रीजी को उनकी सच्चाई के आगे झुकना पड़ा.

चार दिन दादाजी के बड़े अशांति में बीते. दिन तो किसी तरह खाने-पीने और बच्चों से डेपुटेशन की बातें करते बीत जाता था, पर रात काटनी कठिन पड़ती थी. आंख लगते ही उन्हें डेपुटेशन के बारे में सपने आने लगते. कभी लगता कि वह डेपुटेशन ले जा रहे हैं कि रास्ते में किसी जंगली जानवर ने हमला कर दिया. कभी सपना आता कि दरवाजे से ही मंत्रीजी के चपरासी ने डेपुटेशन को भगा दिया. इन्हीं आशंकाओं में दादाजी सो भी नहीं पाते थे.

वह बच्चों से पता करते रहते थे कि कपड़ों के मामले में कितनी तरक्की हुई है. कइयों के डैडी ने रेडी-मेड कपड़े खरीद देने का वायदा किया था. कइयों के घर कपड़ा पड़ा था. केवल सिलना बाकी था.

●

रविवार को दादाजी सवेरे ही उठ गए. आज शाम उन्हें डेपुटेशन ले जाना था. नहा-धोकर उन्होंने नाश्ता किया और अखबार लेकर बाहर धूप में आ बैठे. तभी उन्हें बच्चों ने आ घेरा.

"आओ, भई, आओ. तुम लोगों की तैयारी पूरी हो गई?" दादाजी ने पूछा.

बच्चे चुप रहे.

"तुम लोग बोलते क्यों नहीं हो? मधु, तुम्हारी फ्राक सिल गई?"

"दादाजी, मम्मी ने मेरा टाफी-एलाउंस बढ़ा दिया है. इसलिए उन्होंने मेरी फ्राक नहीं सी," मधु बोली.

"हां, दादाजी, मुझे भी अब बढ़ा हुआ जेब-खर्च मिलेगा. मेरे कपड़े भी नहीं बनाए गए." बबली ने कहा.

दादाजी जैसे आसमान से गिरे. बुझे स्वर में बोले, "ठीक है, तुम दोनों डेपुटेशन में मत जाना."

"पर, दादाजी, कपड़े तो मेरे भी नहीं बने. डैडी कहते हैं कि वह भी वकीलों का एक डेपुटेशन कानून मंत्री के पास ले गए थे. डेपुटेशन ले जाने से कुछ नहीं होता," टिकू बोला.

फिर तो एक के बाद एक सारे ही बच्चों ने बताया कि उन्हें कपड़े तो नहीं मिले, जेब-खर्च अधिक मिलेगा. दादाजी का पारा उबल कर सातवें आसमान तक जा पहुंचा. गरज कर बोले, "तुम क्या समझते हो, मैं तुम्हारे बिना डेपुटेशन नहीं ले जा सकता! मैं अकेला ही बच्चों का डेपुटेशन ले जाऊंगा!"

बच्चे यह सुनकर हंसने लगे. जब दादाजी की समझ में आया कि वह क्या कह बैठे हैं, तो उनका चेहरा बैरंग लिफाफे जैसा हो गया. उन्होंने अखबार समेटा और झपट कर अंदर चले गए. ●

९/६७०३ देवनगर, नई दिल्ली–५

सर्वोदय बाल पुस्तकालय
पु०सं०.....
बिजनौर

डाक-टिकटों पर मछलियां

— जितेंद्रकुमार चतुर्वेदी

बच्चो, तुमने मछलियां तो देखी ही होंगी. किसी ने नदी में देखी होगी, तो किसी ने मत्स्यालय में. मछलियां पालने में रुचि रखने वाले बच्चे घरों में कांच के पात्रों में विभिन्न प्रकार की रंग-बिरंगी मछलियां रखते हैं.

कुछ मछलियां अत्यंत छोटी होती हैं, तो कुछ विशाल शरीर वाली. व्हेल जैसी मछलियां तो अपने विशाल शरीर के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं. इन विशाल मछलियों में से कुछ के मुंह तो इतने बड़े होते हैं कि वे हाथी को भी निगल जाएं. ये इतनी ज्यादा ताकतवर होती हैं कि समुद्र में चलते हुए विशाल जहाजों को भी हिला देती हैं.

कुछ मछलियां साधारण होती हैं, तो कुछ मछलियों की अपनी विशेषताएं होती हैं, जैसे : तलवार मछलियां, विद्युत शक्ति वाली मछलियां, प्रकाश फेंकने वाली मछलियां, संगीत उत्पन्न करने वाली मछलियां आदि.

इन मछलियों की विभिन्न क्रियाओं से संबंधित चित्रों को विश्व के अनेक राष्ट्र अपने डाक-टिकटों पर अंकित कर के उनकी बिक्री द्वारा विदेशी मुद्रा तो प्राप्त करते ही हैं, साथ ही साथ ये टिकट प्रत्येक बालक तथा वयस्क टिकट-संग्रहकर्ता के ज्ञान में वृद्धि भी करते हैं. ऐसे ही महत्वपूर्ण चित्रों वाले टिकट काफी बड़ी मात्रा में विभिन्न देशों द्वारा जारी किए जा चुके हैं, उनमें से कुछ डाक-टिकट यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं.

चित्र नं. १, २, ३ मंगोलिया के तीन विभिन्न डाक-टिकट हैं. इन तिकोने डाक-टिकटों पर क्रमशः 'परका फ्लविएटिलिस', 'लोटा लोटा' तथा 'थायमलस आर्क्टिकस' नामक तीन सुंदर मछलियों को जल में विचरण करते हुए दिखाया गया है.

चित्र नं. ४ का डाक-टिकट जापानी है, जिसमें वहां की जानी-पहचानी मछली को उन्मुक्त विहार करते हुए दिखाया गया है. चित्र ५ एवं ६ के टिकटों पर क्रमशः 'चेरोडन एक्सिलरोडी' तथा 'रासबोरा हीटरोमार्फा' नामक मछलियों के चित्र अंकित हैं. ये दोनों डाक-टिकट क्रमशः प. जर्मनी तथा पू. जर्मनी के हैं तथा इनके मूल्य क्रमशः १० फेनिग तथा १० सेंट हैं.

चित्र नं. ७ पर अंकित है न्यूजीलैंड द्वारा जारी किया गया डाक-टिकट जिस पर 'ब्राउन ट्राउट' नामक मछली को जलाशय के बाहर निकल कर उछाल लगाते हुए तथा एक जंतु को निगल लेने के लिए मुंह खोलते हुए दर्शाया गया है.

चित्र नं. ८, ९, १० के डाक-टिकट पोलैंड के हैं. इन टिकटों के मूल्य हैं क्रमशः २० ग्रोजी, ३० ग्रोजी एवं ५ ग्रोजी. प्रथम दो टिकटों पर 'डिनिक्थिस' एवं 'एस्थेनोप्टेरन' नामक दो मछलियों को समुद्र तल के नीचे स्वच्छंद विचरण करते हुए दिखाया गया है. चित्र नं. १० के टिकट पर 'चीटोडन मिलानोटस' नामक मछली का चित्र अंकित है.

सन १९६२ में हंगरी द्वारा अति सुंदर चित्राकर्षक मछलियों के चित्रों से अंकित एक विशेष डाक-टिकट माला जारी की गई. इस डाक-टिकट माला के अंतर्गत जारी किए गए टिकटों के मूल्य क्रमशः २० फिलर, ३० फिलर, ४० फिलर, ६० फिलर, ८० फिलर, १ फोरिंट, तथा १ फोरिंट २० फिलर हैं. इन टिकटों पर विभिन्न आकारों एवं रंगों वाली मछलियों के विभिन्न मुद्राओं में चित्र अंकित हैं. चित्र नं. ११, १२, १३, १४, १५, १६ एवं १७ की

गुरुजी की छतरी (पृष्ठ ३१ से आगे)

बातचीत नहीं करती थी. गुरुजी की व्यक्तिगत रूप से उससे अभी तक बात नहीं हुई थी. दूसरे दिन एक दूसरी अध्यापिका ने गुरुजी की छतरी मिलने की कहानी शुरू से अंत तक बड़े साहसिक ढंग से बतलाई. साथ में गुरुजी की चतुराई, धीरज और बुद्धिमानी की प्रशंसा की.

उसकी बात सुनकर वह कुछ गंभीर हो गई. उसने पूछा, "बहनजी, क्या रोडवेज की बस में खोई हुई चीजें वापस मिल जाती हैं? मैं तो पहली बार यहां आई हूं. इसलिए आपसे मुझे ये सब बातें पूछनी पड़ रही हैं. चार-पांच दिन पहले मेरा भाई छतरी लेकर कालेज जा रहा था. छतरी वह बस में भूल गया. छतरी एकदम नई थी. हम लोगों ने अपने नसीब को कोस कर संतोष कर लिया. आज आपने बतलाया कि रोडवेज के मुख्य आफिस में खोई हुई चीजें मिल जाती हैं, तो मेरी भी इच्छा होती है कि मैं भी जाकर वहां पर अपनी छतरी का पता लगाऊं. मुमकिन है कि मिल जाए."

उसकी सहेली अध्यापिका ने कहा, "इसमें संकोच करने की क्या बात है? आपका भाई अपनी छतरी रोडवेज की बस में भूल गया था, इसलिए उसके मिलने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी. गुरुजी की छतरी तो एक प्राइवेट बस में छूट गई थी. फिर भी वह मिली शहर के रोडवेज आफिस में. आप उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर सब बातें पूछ लीजिए न."

●

दूसरे दिन लंच में कलावती गुरुजी के पास जाकर नमस्कार कर बोली, "आपकी खोई हुई छतरी कैसे मिली? कृपया मुझे भी बतलाएं, क्योंकि मेरी भी छतरी खो गई है. आपके अनुभव और सूझबूझ की मैंने बड़ी प्रशंसा सुनी है. आपकी कृपा से शायद मेरी छतरी भी मिल जाए."

गुरुजी अपनी प्रशंसा एक लड़की से सुनकर मन ही मन बहुत खुश हुए. उन्होंने कलावती को सभी बातें बतला दीं. तरकीब भी बतला दी कि कठिनाई पैदा होने पर उससे कैसे निपटा जाए. फिर बड़े गर्व के साथ बोले, "देखो, मेरी छतरी खो गई थी. मैं रोडवेज के आफिस से ले आया."

किंतु छतरी देखते ही अध्यापिका भौंचक्की-सी हो गई. सहसा उसके मुंह से निकल पड़ा, "यह मेरी छतरी है, जिसे मेरा भाई रोडवेज की बस में भूल गया था."

गुरुजी ने चकित होकर कहा, "आपका दिमाग तो ठीक है न?"

उसने उत्तर दिया, "मेरा दिमाग तो सही-सलामत है, लेकिन आप जरा सोचें तो सही कि आपकी छतरी प्राइवेट बस में छूटी और अधिकारी को उल्लू बनाकर रोडवेज के आफिस से मेरी छतरी उठा लाए. रोडवेज आफिस में आपकी छतरी कैसे मिल सकती है?"

गुरुजी ने चिल्लाकर जोर से कहा, "तुम पागल हो, पागल! चली जाओ यहां से. मैं तुमसे बात करना नहीं चाहता!"

किंतु अध्यापिका ने पूरे आत्म विश्वास के साथ कहा, "यह मेरी छतरी है. इसमें जरा भी संदेह नहीं है. यह रेशमी कपड़ा, बेंत की डंडी, जिस पर एक विशेष चिह्न हुआ बना है, सब गुहार गुहार कर कहते हैं कि यह मेरी छतरी है. फिर भी आपको विश्वास न हो, तो उसे खोलकर देखिए, मेरे भाई का नाम 'राजेश' छतरी की डंडी पर बीच में लिखा हुआ है."

●

सभी अध्यापक उनकी बातें सुन रहे थे. उनके भी आश्चर्य का ठिकाना न था. उनमें से एक अध्यापक ने कहा, "गुरुजी, आप व्यर्थ में क्यों लड़ रहे हैं? क्या आपके पास भी कोई प्रमाण है? हो तो उसे बतला दें. जिसका प्रमाण सही होगा, छतरी उसे दे दी जाएगी."

गुरुजी ने अपना प्रमाण बतलाते हुए कहा, "मेरी छतरी की डंडी के बीच में 'राम' लिखा हुआ है. आप लोग इसे खोलकर देख लें."

छतरी खोलकर देखी गई, तो डंडी पर बीच में 'राजेश' लिखा हुआ था. 'राम' कहीं भी लिखा हुआ न था. सब लोग ठहाका मारकर हंसने लगे. गुरुजी शरम के मारे पानी पानी हो गए. जमीन में अपनी नजरें गड़ाए हुए उन्होंने चुपचाप अध्यापिका को छतरी दे दी. वह उन्हें धन्यवाद देकर पढ़ाने चली गई.

गुरुजी उस दिन पढ़ाने के लिए कक्षा में नहीं गए. वह अपनी कुर्सी पर किंकर्तव्यविमूढ़ की तरह बैठे हुए विचारों में खोए रहे. उन्हें देखकर लगता था, उनके हृदय की गति बहुत धीमी हो गई है! कुछ ही घंटों में उनका हार्ट-फेल हो जाएगा!

संध्या समय स्कूल बंद होने पर वह सबके बाद घर गए. उस दिन वह यदि ईश्वर को रात भर भला-बुरा कहते रहे हों, तो उसमें आश्चर्य की क्या बात है! ●

(रूपांतरकार : हरिश्चंद्रसिंह)

मूल लेखक का पता :
शांतिकुंज, हिंदू कालोनी, दादर, बंबई–१४

भागा भालू

भालू की मां बोली, "कालू,
आ तुझको नहला दूं,
लगा लगा कर साबुन तेरा
सारा मैल छुड़ा दूं!"

भागा भालू, ज्यों ही मां ने
डाला ठंडा पानी,
लगा चीखने जोर जोर से
याद आ गई नानी!

—प्रयाग शुक्ल

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है.

मध्यावधि चुनाव

मध्यावधि चुनाव में बंदर
एक वोट से हारा,
लेकिन तगड़ा हाथ गधे ने
इस चुनाव में मारा!

वोट मिले नौ सौ निनानवे,
(उसको सबसे ज्यादा!)
घूम रहा है शेर तभी तो
बन कर उसका प्यादा!

—विश्वनाथ गुप्त

वे तो गए बजार!

अंदर झुनकू डर से कांपे,
बाहर सुन कर शोर;
"आज नहीं पैसे छोड़ूंगा,"
बोल सुना घनघोर!

"एक साल तक ले ले मुझसे
खाया खूब उधार!"
लट्ठ पटक कर लाला बोले,
और भरी हुंकार!

भेष बदल कर झुनकूजी ने
खोला घर का द्वार,
घूंघट में मुसका कर बोले—
"वे तो गए बजार!"

—विपिनकुमार पारीक

बिना टिकट

मच्छरजी जब वापस लौटे,
कर पेरिस की सैर!
सभी मच्छरों को अपने से
लगे समझने गैर!

मालुम थी मक्खी को
मच्छर की सब कारस्तानी!
बोली, "पासपोर्ट दिखलाओ,
मिस्टर मच्छर ज्ञानी!"

हंस कर तभी पतंगा बोला,
"बिना टिकट थे, भाई,
छिप कर वायुयान में बैठे,
पास नहीं थी पाई!"

—मंगलराम मिश्र

दुखी राजकुमारी

सूर्य राजा के राज्य में किसी के मन में सुख नहीं···फूलों-सी सुन्दर राजकुमारी की मधुर हँसी न जाने कहाँ चली गई

राजा की परेशानी का कोई ठिकाना नहीं। अपने मंत्रियों की सलाह लेते पर सब बेकार..

कितने ही दामी उपहार लाकर दिये, लेकिन राजकुमारी के चेहरे पर हँसी नहीं आई...

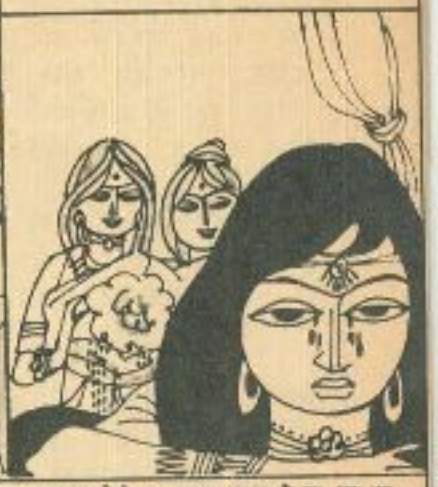

...अब राज्य में मानो दुख की छाया उतर आई

एक दिन, एक सुंदर राजकुमार घोड़े पर सवार उधर से जा रहा था, तो उसकी आँखें अचानक दुखी राजकुमारी पर पड़ीं।

महल के अन्दर...

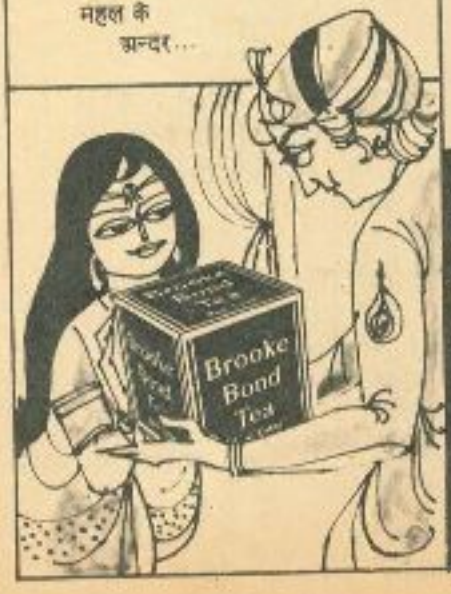

राज्य में जैसे खुशियों की एक लहर दौड़ गई...

आज से मेरे राज्य में सबको खुश रखने के लिये चाहिये ब्रुक बॉन्ड रेड लेबेल चाय।

डबल सीक्रेट एजेंट ००½ (पृष्ठ ७ से आगे)

(पृष्ठ ७ से आगे)

मुद्राओं से मालूम हो रहा था कि इस तरह की खुशामद उन्हें पसंद नहीं थी. फिर राम खड़ा हो गया. गंभीरता के साथ ही वह अपने इन नए तथाकथित चेलों की ओर घूम कर बोला, "क्या तुम में से कोई बता सकता है कि मास्टर साहब को दवात किस ने खींच कर मारी थी?"

"दीपक ने--" एक साथ कई स्वर नए गुरु की असीम कृपा प्राप्त करने के लिए चहक उठे.

"यह बात प्रिंसिपल साहब के सामने कह सकोगे?" राम ने पूछा.

"उस्ताद, झूठमूठ भी कहोगे तो सिर हाजिर कर देंगे. भगवान कसम, यह तो एकदम सच्ची बात है."

"ठीक है, तुम सब लोग अपनी अपनी जगह बैठो और पढ़ने में ध्यान लगाओ," राम ने निश्चय के स्वर में कहा और बैठ गया.

भाई लोगों का काफी देर तक रंगरेलियां और नई उस्तादी का जश्न मनाने का इरादा था. यह आज्ञा बहुतों को पसंद नहीं आई. मगर मजबूरी थी. अपनी अपनी सीटों पर जाते जाते कई एक ने फिर से उस्तादों और गुरुओं के पांव छुए और अपना जनम सार्थक किया.

कुछ देर में घंटा खत्म हो गया. यह ड्राइंग का घंटा था, इसलिए सब लोग कक्षा छोड़ कर बाहर निकलने लगे. दो-चार राम और श्याम के पास रुकते हुए बोले, "गुरु, मैंने कहा शायद आपको मालूम न हो—हम लोग ड्राइंग क्लास ड्राइंग रूम में अटेंड करते हैं. आइए."

राम और श्याम दोनों ने ही गरदन हिला दी. अब तक इन दोनों के गुमसुम स्वभाव से विद्यार्थीगण सहमने लगे थे. कंधे मटका कर पूछने वाले भी बाहर निकल गए. उनके जाते ही राम ने श्याम से कहा--"तू दरवाजे पर खड़ा हो. मैं लेता हूं तलाशी."

श्याम लपक कर दरवाजे पर पहुंचा. राम दीपक और रंगनाथ के डेस्कों पर. दोनों में ताले लगे थे. जेब में हाथ दे कर राम ने एक तार सा निकाला. बिना खटके के मामूली ताले थे. पलक मारते मुंह फाड़ दिए.

डेस्कों में गंदी-संदी किताबें तितर-बितर थीं. कुछ केले और अमरूद रखे थे. राम ने विधिवत् एक एक किताब जल्दी जल्दी, लेकिन कुशलता के साथ खोल खोल कर देखी. एक किताब में एक परचा मिला. पेंसिल से उस पर सिर्फ इतना लिखा था—'शाम को—बोरी वाली जगह."

दोनों डेस्कों में और कोई काम की चीज नहीं थी. राम ने दोनों के ताले बंद किए और चाबियों की जगह हाथ का तार डाल कर चाबियों की तरह ही एक एक बार दोनों को घुमा दिया. कुंडे फिर पहले की तरह बंद हो गए.

दरवाजे के पास जा कर राम श्याम की ओर देख कर मुसकराया और परचा उसकी तरफ बढ़ा दिया. उसने परचा पढ़ कर फिर वापस राम को दे दिया और बोला, "टाउन हॉल."

मुसकरा कर परचा राम ने अपने हाफ पैंट की जेब में रख लिया.

दिन भर के आठों घंटों में दीपक और रंगनाथ फिर लौट कर नहीं आए. विद्यार्थियों ने अपने नए आध्यात्मिक गुरुओं की सेवा-सुश्रुषा में कोई कमी नहीं रख छोड़ी. आधी छुट्टी में उन्हें टाफियां, कुल्फियां, चाट—सभी तरह की लुभावनी चीजें भेंट की गईं. लेकिन उन्होंने हरेक के लिए गरदनें हिला दीं. किसी के हाथ में उनकी नब्ज ही नहीं आ रही थी.

आठवें घंटे में सीताचरण जी हिंदी पढ़ाने के लिए आए. बाबू गोविंदसहाय ने सब सहयोगियों को पहले ही खबरदार कर दिया था कि इस नए जोड़े को उनकी इच्छानुसार कक्षा में बैठने दिया जाए, इच्छानुसार जाने दिया जाए. इसलिए जब पढ़ाते पढ़ाते वह थोड़ा रुके, तभी राम और श्याम एक साथ उठ खड़े हुए.

"क्षमा करें, मास्साब," राम ने कहा.

"अरे, तुम लोग जाना चाहते हो? जाओ, बेटा, आज पहला दिन है तुम लोगों का. जाओ. आराम करो."

श्रद्धा से टीचर को नमस्कार कर के दोनों लड़के कक्षा से बाहर आ गए. एक कमरे की ओट में जा कर राम ने कहा, "चैक, प्लीज."

दोनों ने एक-दूसरे के अस्त्र-शस्त्रों की जांच की—एक क्रमबद्ध तरीके से.

(क्रमश:)

रंगनाथ और दीपक को किसने 'बोरी वाली जगह' मिलने के लिए बुलाया था? राम और श्याम का मुकाबला वहां किन लोगों से पड़ा? किस प्रकार राम और श्याम का उनसे भयंकर द्वंद्व-युद्ध हुआ? यह, और विद्यार्थियों में दुराचार फैलाने वाले एक भयंकर षड्यंत्र का हाल अगले अंक में पढ़िए.

१० नक्ल्का बिल्डिंग, २१ वां रास्ता, चेंबूर, बंबई-७१.

खिलौनों का डिब्बा

मिस्टर कुकड़ूंकूं

— अरुणकुमार

लो, भई बच्चो, इस बार मिस्टर कुकड़ूंकूं तुमसे कुछ कहना चाहते हैं. पहले इनको तैयार करो, तो यह अपनी गरदन उचका कर कुछ कहें.

इन्हें इस प्रकार तैयार करना होगा :

सामने के पृष्ठ पर मिस्टर कुकड़ूंकूं का सिर और धड़ अलग अलग दिखाई दे रहा है. धड़ को उससे बाहर वाले चौखटों पर और सिर को उसकी बाहर वाली रेखाओं पर सफाई के साथ काट लो. फिर जैसे हमेशा करते हो—इन्हें अलग अलग पोस्ट कार्ड जितने मोटे गत्ते पर चिपका लो. इससे ये जरा मजबूत हो जाएंगे. सूखने के लिए किताबों के नीचे दबा दो. जब सूख जाएं तो निकाल लो और सिर के चित्र का फालतू गत्ता काट कर फेंक दो.

धड़ के ऊपर जो 'सूराख' का गोला है, उसे गोलाई में काट कर निकाल दो.

धड़ और सिर दोनों के पीछे इलास्टिक टेप या साइकिल के ट्यूब का आधा इंच चौड़ा और दो इंच लंबा एक एक टुकड़ा रख कर उनके सिरे प्लास्टिक की चिपकती टेप से, या गोंद लगी कागज की पट्टी से चिपका दो. देखो इसी पृष्ठ पर नमूना–१. इसी तरह धड़ के पीछे भी इलास्टिक चिपकानी है.

नमूना–२ देखो. सिर के पीछे संकेतिका उंगली इलास्टिक के भीतर नमूना–१ की तरह फंसाने पर, दूसरी ओर से नमूना–२ की तरह दिखाई देगी. लेकिन इससे पहले धड़ के सूराख में से उंगली ऊपर निकालो, फिर सिर को उंगली में फंसाओ. अंगूठा अब तुम धड़ की इलास्टिक में फंसा सकते हो.

लो हो गए मिस्टर कुकड़ूंकूं तैयार. अंगूठे से धड़ के चौखटे को हौले हौले हिलाते हुए उंगली से सिर को इस तरह ऊंचा-नीचा करो जैसे मिस्टर कुकड़ूंकूं दाना चुग रहे हों. साथ ही मुंह से 'कुकड़ूंकूं' करते रहो. तुम्हारे मित्र यह खेल देख कर बड़े खुश होंगे. उन्हें बता देना कि इसे तुमने 'पराग' के जनवरी '६९ के अंक से काट कर बनाया है.

अगले मास एक बढ़िया खेल हम तुम्हारे लिए खोज-कर लाएंगे. तैयार रहना. ●

नमूना २

नमूना १

पीछे का भाग

नमूना ३

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता ८०

बच्चो, नीचे का चित्र है न मजेदार! काश यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० फरवरी तक भेज दो. हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्र की पृष्ठभूमि को तुम अपनी कल्पना से और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करने की तुम्हें स्वतंत्रता है. सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमें से दो के चित्रों को छापा भी जाएगा. लेकिन रंग भरने वालों की उम्र १६ साल से अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोग में लाने चाहिए. चित्र के नीचे वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है. पूर्तियां भेजने का पता : संपादक, 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ८०), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई—१.

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'रंग भरो प्रतियोगिता – ८०

यहां से काटो

रावलगाँव
गोलियां, टॉफीयां,
लॅको-बोन-बोन
और पर्ल कैन्डी
मन को ललचाने वाली रावलगांव गोलियां तरह तरह के मजेदार स्वादों में ओरेंज, लेमन, चाकलेट, मिंट। जब कभी, जहां कहीं मन चाहे इनका आनंद लीजिए।
रावलगांव
मेरी मनपसंद
गोलियां
PRATIBHA 888H
सोल सेलिंग एजंटस्: मेसर्स मोतीलाल गिरधरलाल अघारकर, मालेगांव, जि. न.
बंबई, दिल्ली और उत्तरी भारत के एजेंट: मेसर्स चितरंजन ऐन्ड कं. • ३८, मेंग ८६५, डॉ. जोशी रोड, करोल बाग, नयी दिल्ली-५ फोन: ५६४२३७.